आजादी का
अमृत महोत्सव

तृण स्मारिका

राजभाषा की यात्रा -2021

भा.कृ.अनु.प. - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय
जबलपुर, म.प्र.
आई.एस.ओ. 9001 : 2015 प्रमाणित

वन्दे मातरम, आज़ादी की नींव हैं ये हस्ताक्षर.....

स्रोत : दैनिक भास्कर समाचार-पत्र जबलपुर संस्करण (15 अगस्त, 2021)

आजादी का अमृत महोत्सव

तृण स्मारिका

राजभाषा की यात्रा -2021

भाकृअनुप
ICAR

भा.कृ.अनु.प. – खरपतवार अनुसंधान निदेशालय

ICAR - Directorate of Weed Research

जबलपुर, मध्य प्रदेश

Jabalpur, Madhya Pradesh

आई.एस.ओ. 9001 : 2015 प्रमाणित

ISO 9001 : 2015 Certified

D W R

उद्धरण

तृण स्मारिका, राजभाषा की यात्रा –2021, भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर, 102 पृष्ठ

प्रकाशक

डॉ. जे.एस. मिश्र

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय
जबलपुर, म.प्र.

संकलन

श्री बंसत मिश्रा

प्रभारी राजभाषा, भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय
जबलपुर, म.प्र.

मार्गदर्शक मंडल

डॉ. पी.के. सिंह

डॉ. वी.के. चौधरी

डॉ. योगिता घरडे

श्री संदीप घगट

श्री जी.आर. डोंगरे

श्री पंकज शुक्ला

श्री आर. हाडगे

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर, म.प्र. द्वारा प्रकाशित

सम्पर्क सूत्र

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश
फोन : 0761–2353101, 2353934 फैक्स : 0761–2353129
ई–मेल : Director.Weed@icar.gov.in
वेबसाइट : https://dwr.icar.gov.in/

फेसबुक लिंक / Facebook Link- https://www.facebook.com/ICAR-Directorate-of-Weed-Research-101266561775694
ट्विटर लिंक / Twitter Link- https://twitter.com/DwrIcar
यूट्यूब लिंक / Youtube Link - https://www.youtube.com/channel/UC9WOjNoMOttJalWdLfumMnA

प्रकाशन का उद्देश्य

भारत भाषाई विविधताओं में एकता वाला राष्ट्र है जिसमें अनेक भाषा एवं बोलियां प्रचलित हैं जो एक दूसरे की सहोदरा है, किन्तु उनमें हिन्दी सरल, सहज व सर्वग्राही भाषा है। इसमें राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने की अद्भुत क्षमता है, इन्ही कारणों से देश की संविधान सभा ने इसको संघ के कामकाज के लिए राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। देश में वैज्ञानिकों तथा अनुसांधनकर्ताओं द्वारा किये जा रहे अनुसंधानों से प्राप्त उन्नत कृषि एवं खरपतवार प्रबंधन तकनीकों की जानकारी कृषकों एवं आमजन तक सरल एवं सहज भाषा में पहुंचाने की नितांत आवश्यकता है और यह किसान एवं विज्ञान दोनों के हित में है।

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय का हमेशा से यह ध्येय रहा है कि उन्नत कृषि एवं खरपतवार प्रबंधन के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों को किसानों तक उनकी भाषा में उपलब्ध कराया जाए। इसके लिए राजभाषा हिन्दी का स्थान सर्वोपरि है। अनुसंधानिक उन्नत तकनीकी जानकारी को कृषकों और आमजन तक पहुंचाने में निदेशालय द्वारा वर्ष भर राजभाषा हिन्दी में किये गये कार्यो पर आधारित पुस्तिका तृण स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

स्मारिका के इस अंक मे निदेशालय द्वारा वर्ष 2021 में किये गये अनुसंधानिक कार्यो एवं कृषको हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी संकलित कर प्रकाशित की जा रही हैं, जो कृषकों, कृषि अधिकारियों, कृषि विज्ञान केन्द्र कर्मियों, छात्रों तथा आम जनमानस के लिए ज्ञानवर्धक साबित होंगी।

संस्थान के निदेशक के प्रति मार्गदर्शक मण्डल अपना आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने स्मारिका के प्रकाशन हेतु न केवल सहर्ष स्वीकृति दी बल्कि समय–समय पर अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन भी प्रदान किया, जिससे तृण स्मारिका का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

मार्गदर्शक मण्डल
राजभाषा कार्यान्वयन

भाकृअनुप

ICAR

सत्यमेव जयते

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, पीएच.डी.
सचिव एवं महानिदेशक

Dr. TRILOCHAN MOHAPATRA, Ph.D.
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel : 23382629, 23386711 Fax : 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

संदेश

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा खरपतवारों के प्रबंधन हेतु नवीनतम अनुसंधान किये जा रहे हैं। ये अनुसंधान कार्य कृषि क्षेत्र में उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से अति आवश्यक है। अनुसंधान उपरांत नवीनतम तकनीक को किसानों तक उनकी भाषा में उपलब्ध कराना अति आवश्यक है जिससे तकनीकों का हस्तांतरण आम किसानों तक आसानी से हो सके तथा आगामी वर्षो में किसानों की आय को बढ़ाने में यह सहायक हो। राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु निदेशालय द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे है। वर्ष 2021 के दौरान राजभाषा पर आधारित कार्यक्रमों को उल्लेखित करती हुई पत्रिका **''तृण स्मारिका''** का प्रकाशन किया जाना एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि खरपतवार अनुसंधान निदेशालय राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु ''तृण स्मारिक'' का प्रकाशन कर रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्य संस्थानों के लिए राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु प्रेरणादायक होगा।

''तृण स्मारिका'' के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

त्रि. महापात्र
10/01/22

दिनांक: 10 जनवरी, 2022

(त्रिलोचन महापात्र)

भाकृअनुप
ICAR

सत्यमेव जयते

संजय गर्ग
अपर सचिव, डेयर एवं सचिव, आई.सी.ए.आर.

SANJAY GARG
ADDITIONAL SECRETARY, DARE &
SCRETARY, ICAR

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
कृषि भवन, नई दिल्ली–110 001

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH AND EDUCATION
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI- 110 001

संदेश

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अर्थव्यवस्था का बड़ा भाग कृषि पर आधारित है। इस दृष्टि से कृषि के क्षेत्र में हो रहे नित नए प्रयोगों, अनुसंधानों एवं तकनीकों की जानकारी कृषकों को अपनी भाषा में प्राप्त होना अतिआवश्यक है। इस दिशा में भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर अपनी राजभाषा पत्रिका **''तृण स्मारिका''** के माध्यम से कृषकों को खरपतवार से संबंधित विभिन्न अनुसंधान प्रयासों की जानकारी सरल भाषा में उपलब्ध करा रहा है।

इस अवसर पर ''तृण स्मारिका'' के सफल प्रकाशन के लिए मैं निदेशालय को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

दिनांक: 10 जनवरी, 2022

(संजय गर्ग)

Room No. 106, Krishi Bhawan, Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi - 110001
Tel. No. : +91 11 23384450 Fax : +91 11 23387705 Email : secy.icar@nic.in

भाकृअनुप
ICAR

डॉ. सुरेश कुमार चौधरी
उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन)
Dr. Suresh Kumar Chaudhari
Deputy Director General
(Natural Resource Management)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि अनुसंधान भवन-II
पूसा, नई दिल्ली 110012, भारत
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
KRISHI ANUSANDHAN BHAVAN-II,
PUSA, NEW DELHI 110012, INDIA

संदेश

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर खरपतवार प्रबंधन पर अनुसंधान करने वाला देश का अग्रणी संस्थान है। खरपतवारों की समस्या से संपूर्ण कृषि जगत एवं अन्य गैर फसलीय क्षेत्र भी प्रभावित हैं। इस विश्वव्यापी जटिल समस्या के समाधान हेतु संस्थान द्वारा कृषक बंधुओं को सरल भाषा में वैज्ञानिक एवं तकनीक जानकारी प्रदान करना एक सराहनीय कदम है।

निदेशालय द्वारा खरपतवारों के नियंत्रण हेतु लगातार किए जा रहे प्रयासों को दर्शाती पत्रिका **''तृण स्मारिका''** किसानों में जागरूकता लाने के साथ ही राजभाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पत्रिका के माध्यम से हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी के इस उत्तम प्रयास की मैं सराहना करता हूँ एवं ''तृण स्मारिका'' के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को शुभकामना देता हूँ।

दिनांक: 10 जनवरी, 2022
स्थान : नई दिल्ली

(सुरेश कुमार चौधरी)

Ph.: +91-11-25848364 Fax: +91-11-25848366 Email: ddg.nrm @icar.gov.in Wegsite: www.icar.org.in

भाकृअनुप
ICAR

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

(राज्य विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश अधिनियम क्रमांक 34, वर्ष–2011 द्वारा संचालित)

प्रो. खेमसिंह डहेरिया
कुलपति

दूरभाष कार्यालय : 0755–2491051
मोबाइल : 91–9424684608
9826344608

क्रमांक : 1370/कु.प./2021
दिनांक : 11/01/2022

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु राजभाषा पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन लगातार किया जा रहा है। राजभाषा के प्रचार–प्रसार को उल्लेखित करती हुई पत्रिका **''तृण स्मारिका''** का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका अपनी सरल भाषा से तकनीकी ज्ञान को कृषक समुदाय तक पहुचाकर लाभान्वित करेगी। कृषि की उन्नत प्रौद्योगिकी के प्रचार–प्रसार में हिंदी का अभूतपूर्व योगदान है। ''तृण स्मारिका'' के माध्यम से खरपतवार नियंत्रण तकनीकी का प्रचार–प्रसार एक सराहनीय प्रयास होगा।

इस अवसर पर मैं निदेशालय को बधाई देता हूँ तथा ''तृण स्मारिका'' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

(प्रो. खेमसिंह डहेरिया)
कुलपति

ग्राम मुगालिया कोट, सूखी सेवनिया, विदिशा रोड, भोपाल – 462038 (म.प्र.)
वेवसाइट: www.abvhv.edu.in अणुडाक: abvhvbpl@gmail.com, khemsingh.daheriya@gmail.com

भाकृअनुप
ICAR

डॉ. एस. भास्कर
सहायक महानिदेशक
(सस्य, कृ.वा. एवं ज.प.)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग,
नई दिल्ली-110 001
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
KRISHI BHAVAN, DR. RAJENDRA PRASAD ROAD,
NEW DELHI-110001

संदेश

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु निरन्तर कार्य कर रहा है तथा कृषि के क्षेत्र में हो रहे प्रयोगों, अनुसंधानों एवं तकनीकों की जानकारी कृषकों को राजभाषा हिन्दी में पंहुचा रहा है। इस दिशा में "तृण स्मारिका" एक मील का पत्थर साबित होगी।

इस अवसर पर "तृण स्मारिका" के सफल प्रकाशन के लिए मैं निदेशालय को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(एस. भास्कर)

दिनांक: 11 जनवरी, 2022
स्थान : नई दिल्ली

भाकृअनुप
ICAR

श्रीमती सीमा चोपड़ा
निदेशक, राजभाषा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग,
नई दिल्ली-110 001
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
KRISHI BHAVAN, DR. RAJENDRA PRASAD ROAD,
NEW DELHI-110 001

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु राजभाषा पर आधारित कार्यक्रमों को उल्लेखित करती हुई पत्रिका **''तृण स्मारिका''** का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका अपनी सरल भाषा से वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान को कृषक समुदाय तक जानकारी पहुचा कर लाभान्वित करेगी। कृषि की उन्नत प्रौद्योगिकी के प्रचार–प्रसार में राजभाषा हिन्दी का अभूतपूर्व योगदान है। **''तृण स्मारिका''** के माध्यम से खरपतवार नियंत्रण तकनीकों का प्रचार–प्रसार एक सराहनीय प्रयास होगा।

इस अवसर पर मैं निदेशालय को बधाई देती हूं तथा **''तृण स्मारिका''** के सफल प्रकाशन की कामना करती हूं।

दिनांक: 10 जनवरी, 2022

सीमा चोपड़ा 10.1.22
(सीमा चोपड़ा)

भाकृअनुप
ICAR

निदेशक की कलम से...

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय खरपतवार प्रबंधन से संबंधित नवाचार प्रक्रिया में विगत 32 वर्षो से निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। निदेशालय निरंतर बुनियादी और रणनीतिक शोध एवं प्रसार द्वारा कृषकों को विभिन्न फसलों एवं फसल प्रणालियों, गैर कृषित क्षेत्रों एवं जलीय संरचनाओं में आने वाले खरपतवारों के प्रबंधन की उन्नत तकनीक एवं प्रशिक्षण उपलब्ध करवा रहा है। निदेशालय द्वारा वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केंद्रों के विषय वस्तु विशेषज्ञों, कृषि अधिकारियों एवं कृषकों के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र भ्रमण आयोजित किये जाते हैं, ताकि आधुनिक खरपतवार प्रबंधन के तकनीकी पहलुओं से वे व्यवहारिक रूप से अवगत होकर उन्नत तकनीकों से कृषि उत्पादन को बढ़ाकर ज्यादा से ज्यादा आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकें।

वर्तमान में कोरोना महामारी का सामना करते हुए भी हम इस दिशा में अग्रसर रहे हैं। भारत सरकार के दिशा–निर्देशानुसार "आजादी का अमृत महोत्सव'' कार्यक्रम के अंतर्गत हम कृषक बंधुओं से वेबिनार के माध्यम से जुड़कर उनकी कृषि संबंधित समस्याओं का निराकरण कर रहें हैं।

देशहित के लिए संस्थान के योगदान, प्रयास, और वर्ष भर किये गये राजभाषा के कार्यो की एक झलक आपको इस प्रकाशन में भी मिलेगी। मुझे खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के प्रकाशन "तृण स्मारिका" के प्रथम अंक को प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका द्वारा हम ज्यादा से ज्यादा किसानो, छात्रों, हितग्राहियों एवं वैज्ञानिकों को खरपतवार प्रबंधन के विभिन्न आयामों पर जागरूक कर पायेंगे। आपके बहुमूल्य सुझाव, प्रतिक्रियाओं के लिए हम प्रतीक्षारत रहेंगे।

मैं निदेशालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस सुन्दर संकलन में सहयोग हेतु धन्यवाद देता हूँ।

नववर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएँ

जय हिन्द !

दिनांक: 10 जनवरी, 2022

जे.एस. मिश्र
निदेशक

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् महिमा गीत

जय जय कृषि परिषद् भारत की
सुखद प्रतीक हरित भारत की

कृषि धन पशु धन मानव जीवन
दुग्ध मत्स्य फल यंत्र सुवर्धन

वैज्ञानिक विधि नव तकनीकी
पारिस्थितिकी का संरक्षण

सस्य श्यामला छवि भारत की
जय जय कृषि परिषद् भारत की

हिम प्रदेश से सागर तट तक
मरू धरती से पूर्वोत्तर तक

हर पथ पर है मित्र कृषक की
शिक्षा, शोध, प्रसार, सकल तक
आशा स्वालम्बित भारत की

जय जय कृषि परिषद् भारत की
जय जय कृषि परिषद् भारत की

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय का परिचय	1
2.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा निदेशालय को प्रथम पुरस्कार	5
3.	हिन्दी दिवस का आयोजन	7
4.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	9
5.	हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह का आयोजन	11
6.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	13
7.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	15
8.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	17
9.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	19
10.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	21
11.	खरपतवार प्रबंधन की आवश्यकता और महत्व विषय पर हितधारकों के लिए वेबिनार का आयोजन	23
12.	उत्तर प्रदेश के कृषकों के लिए प्रशिक्षण–सह–भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन	25
13.	विद्यार्थियों के भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन	27
14.	प्रशिक्षण सह कृषक आवास का उद्घाटन	29
15.	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन	31
16.	सब्जियों में खरपतवार प्रबंधन विषय पर एग्रोस्टार द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन	33
17.	किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह–भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन	35
18.	किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह–भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन	37
19.	किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह–भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन	39
20.	विश्व जल दिवस का आयोजन	41
21.	किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह–भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन	43
22.	कुशल सहायी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन	45
23.	33वें स्थापना दिवस का आयोजन	47
24.	विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन	49
25.	किसानों हेतु वर्चुअल जागरूकता गोष्ठी का आयोजन	51
26.	विश्व योग दिवस का आयोजन	53
27.	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना – खरपतवार प्रबंधन की वार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन	55
28.	93वॉं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् स्थापना दिवस एवं वृहद् वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन	57
29.	16वें गाजरघास जागरूकता सप्ताह पर पत्रकार वार्ता का आयोजन	59

|| सरस्वती-वंदना ||

वीणावादिनी
वर दे, वीणावादिनी वर दे !
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-वेद तम हर, प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे !

नव गति, नव लय, ताल-छंद्र नव
नवल कंठ, नव जलद-मंद्र रव,
नव नभ के विहग वृंद को,
नव पर, नव स्वर दे।
वर दे, वीणावादिनी वर दे !

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम् !
हंस वाहिनी समायुक्ता मां विघा दान करोतु में ॐ।।

Om Saraswati Maya Drishtwa, Veena Pustak Dharnim,
Hans Vahini Samayuktaa Maa Vidya Daan Karotu Me ...

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
30.	गाजरघास जागरूकता सप्ताह पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन	61
31.	अनुसूचित जाति उप योजना के तहत् किसानों को फलदार पौधों का वितरण	63
32.	कृषक संगोष्ठी–सह–परिचर्चा का आयोजन	65
33.	पोषण वाटिका महाभियान एवं वृक्षारोपण का आयोजन	67
34.	कृषक–वैज्ञानिक अन्तराफलक बैठक का आयोजन	69
35.	विशेष राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का आयोजन	71
36.	वैज्ञानिक–कृषक परिचर्चा का आयोजन	73
37.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन	75
38.	पेस्टीसाइड प्रयोग पर सावधानियां तथा सुरक्षा उपकरणों के उपयोग पर परिचर्चा का आयोजन	77
39.	राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भावना सप्ताह एवं झंडा दिवस का आयोजन	79
40.	विश्व मृदा दिवस का आयोजन	81
41.	प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन	83
42.	स्वच्छता पखवाड़ा–2021 का आयोजन	85
43.	कृषि–अपशिष्ट के उपयोग की जानकारी के लिए सोशल और डिजिटल मीडिया पर अभियान का आयोजन	87
44.	जैव शाकनाशी : वर्तमान स्थिति और भविष्य का रास्ता विषय पर विचार–मंथन का आयोजन	89
45.	महिला किसान दिवस का आयोजन	91
46.	विश्व खाद्य दिवस का आयोजन	93
47.	स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत किसान दिवस का आयोजन	95
48.	कृषक सभागार का उद्घाटन	97
49.	स्वच्छता पखवाड़ा का समापन	99
50.	अनुसूचित जाति के किसानों हेतु 6 दिवसीय प्रशिक्षण	101
	वर्ष भर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों से संबंधित समाचारो की झलकियाँ	

भा.कृ.अनु.प.-ख.अनु.निदे.
WELCOME TO ICAR-DWR

भा.कृ.अनु.प.-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय का परिचय

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, 22 अप्रैल 1989 को राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के रूप में अस्तित्व में आया। निदेशालय का उद्देश्य कम लागत वाली और पर्यावरण हितैषी खरपतवार प्रबंधन की नई तकनीकों के विकास द्वारा भविष्य की चुनौतियों को देखते हुये टिकाऊ कृषि और अन्य सामाजिक लाभों को बनाये रखना एवं भारत के नागरिकों के लिये खरपतवार नियंत्रण में वैज्ञानिक शोध एवं तकनीकों के विकास से कृषि उत्पादन में अधिकाधिक लाभ, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक लाभ प्रदान करना है। यह निदेशालय सम्पूर्ण विश्व में एक मात्र संस्थान है जो कि विशेष रूप से विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकी प्रणालियों में मौजूदा और उभरती हुई खरपतवार समस्याओं से निपटने के लिए अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं तकनीकी हस्तानान्तरण का कार्य करता है। निदेशालय विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में स्थित अखिल भारतीय समन्वित खरपतवार प्रबंधन परियोजना केन्द्रों के माध्यम से स्थान विशिष्ठ अनुसंधान कर राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व प्रदान करता हैं। संगठन में गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली लागू करने के लिये, निदेशालय को “ISO 9001 : 2015” प्रमाणीकरण प्राप्त हुआ है।

पिछले 30 वर्षों से इस संस्थान ने खरपतवार प्रबंधन पर केन्द्रित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे विविध फसल प्रणालियों में टिकाऊ खरपतवार प्रबधंन तकनीकों का विकास; जलवायु परिवर्तन के दौर में खरपतवारों में परिवर्तन, प्रबंधन एवं खरपतवारनाशी प्रतिरोधक क्षमता; फसलीय और गैर–फसलीय क्षेत्रों में समस्यात्मक खरपतवारों का जैवविज्ञान एवं प्रबंधन; पर्यावरण में खरपतवारनाशी अवशेषों की निगरानी, क्षरण और शमन एवं खरपतवार प्रबंधन तकनीकों का कृषक प्रक्षेत्र पर शोध परीक्षण एवं प्रदर्शन तथा उनके प्रभावों का मूल्यांकन के माध्यम से अग्रणी भूमिका निभाई है। खरपतवार प्रबधंन की तकनीकों को खेत पर अनुसंधान एवं प्रदर्शनों के माध्यम से बड़े क्षेत्रों तक पहुंचाया गया जिससे इन्हें अपनाया जा सके तथा इन तकनीकों ने किसानों की कृषि उत्पादकता एवं आजीविका को उन्नत बनाने में मदद की है। विविध फसल प्रणाली में खरपतवार प्रबंधन, परजीवी खरपतवार, जलीय खरपतवार, मौसम परिवर्तन के कारण खरपतवार गतिशीलता, शाकनाशी प्रतिरोधकता और शाकनाशियों का पर्यावरण पर प्रभाव तथा निगरानी आदि विषयों पर संस्थान लगातार कार्यरत है। निदेशालय ने अपने प्रक्षेत्र पर संरक्षित कृषि के सभी सिद्वांतो को अपनाया है और वैश्विक स्तर की खरपतवार प्रबंधन के विभिन्न पहलुओ में अग्रिम शोध करने के लिए अपने प्रक्षेत्र को ’आदर्श प्रक्षेत्र’ के रुप में विकसित किया है।

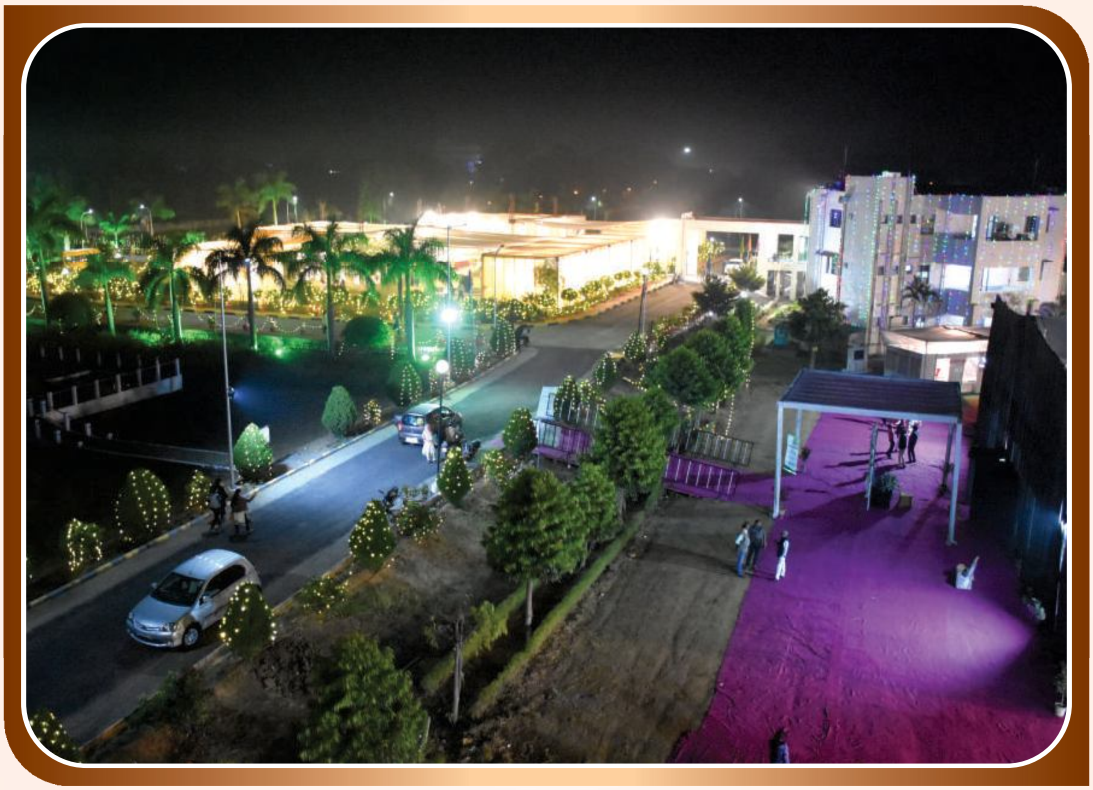

निदेशालय में सस्य विज्ञान, पारिस्थितकीय विज्ञान, मृदाविज्ञान, रसायन अवशेष विश्लेषण, कृषि जैव प्रौद्योगिकी, जैविक खरपतवार प्रबंधन और सूक्ष्मजीव विज्ञान के शोध कार्यों के लिये समर्पित आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालायें हैं। जिनमें भविष्य में होने वाले जलवायु परिवर्तन का फसल खरपतवार की अंतरक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने की सुविधा एवं फायटोरेमेडियेशन ईकाई और मैक्सिकन बीटल पालन ईकाई जैसी विशेष सुविधायें भी हैं। निदेशालय में खरपतवार नियंत्रण के लिये उपकरणों एवं औजारों की मरम्मत, निर्माण, डिजाइन और विकसित करने के लिये पूर्ण विकसित कृषि अभियांत्रिकी कार्यशाला है। खरपतवार विज्ञान एवं प्रबंधन तकनीकों संबंधी नवीनतम् जानकारी के प्रदर्शन हेतु एक सूचना केन्द्र भी विकसित किया गया है।

निदेशालय द्वारा विकसित उन्नत तकनीकों को तकनीकी हस्तानान्तरण के विभिन्न माध्यमों जैसे प्रशिक्षण, भ्रमण, किसान मेला, संगोष्ठी आदि द्वारा किसानों तक पहुंचाने का कार्य किया जाता है इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं जैसे मेरा गांव–मेरा गौरव, फार्मस फर्स्ट, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति, किसान बायोटेक आदि के माध्यम से भी निदेशालय द्वारा विकसित उन्त तकनीकों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है। जिससे किसानों को कम लागत पर अच्छा उत्पादन प्राप्त हो सके तथा उनकी आय को दुगनी करने मे मदद मिल सकें। निदेशालय द्वारा कृषको एवं अन्य जरूरतमन्द लोगों की खरपतवार प्रबंधन पर जानकारी प्रदान करने के लिए दो मोबाइल एप ''वीड मैनेजर'' तथा ''हर्बकैल'' का भी विकास किया गया है और ये दोनों एप गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है।

निदेशालय के अधीन अखिल भारतीय समन्वित खरपतवार नियंत्रण परियोजना देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों में कार्यरत है। देश के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में 17 परियोजना केन्द्रों के माध्यम से यह निदेशालय विभिन्न नेटवर्क कार्यक्रम चलाता है। इसके अलावा निदेशालय स्थानीय, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक तथा शोध संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों व अन्य विश्वविद्यालयों को शोध संबंधी कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त निदेशालय कई भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों और अन्य अनुसंधान संगठनों जैसे बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया, आई.आर.आर.आई., शाकनाशी उद्योगों, गैर सरकारी संस्थानों, राष्ट्रीय बीज निगम और कृषि विज्ञान केन्द्र के सक्रिय सहयोग से राष्ट्र हित में तकनीकी ज्ञान का आदान–प्रदान करता है।

निदेशालय छात्रों, राज्य के कृषि विभागों के अधिकारियों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और भा. कृ.अनु.प. के वैज्ञानिकों के लिये उन्नत खरपतवार प्रबंधन विषय पर समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करता है। इसके अतिरिक्त निदेशालय में लगातार किसान क्षेत्र दिवस/संगोष्ठी, उद्योग दिवस, शिक्षा दिवस, विश्व मृदा दिवस, स्थापना दिवस, राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह, गाजरघास जागरूकता सप्ताह और वैज्ञानिक–कृषि अधिकारियों, किसानों की अंतराफलक बैठक नियमित रूप से हो रही है।

उपक्रम एवं संस्थान)
क्रमांक - 02
बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा निदेशालय को प्रथम पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय क्रमांक–02 द्वारा वर्ष 2020 के दौरान राजभाषा हिन्दी के प्रयोग–प्रसार के क्षेत्र में सर्वाधिक एवं सराहनीय कार्यो के लिए खरपतवार अनुसंधान निदेशालय को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय क्रमांक–02 के अधीन आने वाले लगभग 48 केन्द्रीय सरकार के संस्थानो का नराकास द्वारा पूरे वर्ष के दौरान राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार का मूल्यांकन किया जाता है। दिनांक 23 दिसम्बर, 2021 को आयोजित 9वीं छःमाही बैठक के आयोजन के दौरान महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल एवं अन्य गणमान्य जनों की गरिमामय उपस्थिती में खरपतवार अनुसंधान निदेशालय को यह सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र द्वारा हर्ष व्यक्त करते हुये निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के विशेष प्रयासो से राजभाषा हिन्दी में किये जा रहे शत् प्रतिशत कार्यों की सराहना की। आपने बताया कि निदेशालय में तकनीकी एवं वैज्ञानिक शोध कार्य किये जाते है परन्तु आम कृषको को तकनीकी एवं वैज्ञानिक शोध कार्यों की जानकारी पूर्ण रूप से हिन्दी में विस्तार पत्रिकाओं एवं निदेशालय की हिन्दी पत्रिका 'तृण संदेश' के माध्यम से प्रदान की जाती है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

हिन्दी दिवस

आज़ादी का अमृत महोत्सव
हिन्दी दिवस
दिनांक - 14 सितम्बर, 2021
आयोजक
राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भा.कृ.अनु.प.- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)

हिन्दी दिवस का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय में 14.09.2021 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया तथा इसके साथ ही हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ निदेशालय के निदेशक / अध्यक्ष रा.का. समिति डॉ. जे.एस. मिश्र, डॉ. पी.के. सिंह प्रधान वैज्ञानिक एवं सह अध्यक्ष रा.का.समिति तथा श्री बसंत मिश्रा प्रभारी, रा.का.समिति द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस अवसर पर प्रभारी, रा.का.समिति ने सभी अधिकारियों / कर्मचारियों का स्वागत किया साथ ही अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा को 14 सितंबर 1949 को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। तभी से 14 सितंबर को प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस के रुप में मनाया जाता है। किन्तु आज हिन्दुस्तान में हिन्दी गरीबों की भाषा मानी जाती है। इस समय धनी, उच्च मध्यम, सामान्य मध्यम वर्ग तथा निम्न मध्यम वर्ग के लोगों के लिये अंग्रेजी भाषा एक ऐसी सुविधा है जिसका वह प्रयोग कर रहे हैं और इनमें अधिकतर की नयी पीढ़ी अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी की कितनी भी सुविधा इंटरनेट पर आ जाये उसका लाभ तब तक नहीं है जब तक उसे सामान्य समाज की आदत नहीं बनाया जायेगा। हमारे देश के हर इंसान को इतना तो मालूम होना चाहिये कि हिंदी हमारी राजभाषा है जिसका अर्थ है कि यह पूरे देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।

इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने सर्वप्रथम हिंदी दिवस की सभी को बधाई देते हुये हिन्दी दिवस पर निदेशालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने हेतु राजभाषा की प्रतिज्ञा दिलाई। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि वास्तव में हिन्दी को हिन्दी भाषी क्षेत्र का वह सहयोग नहीं मिल रहा है जो उसका हक है। वह बड़े क्षेत्र की मातृभाषा होकर भी राष्ट्रभाषा के लिये संघर्ष करते नजर आ रही है। शायद इसलिये आज हमें पखवाड़ा मनाने की जरूरत पड़ गई है। अंत में उन्होंने कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है और हमें ही उसे उसका हक दिलाना है।

इसी क्रम में डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं सह अध्यक्ष रा.का.समिति द्वारा माननीय श्री नरेंद्र सिंह तोमर, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार एवं भा.कृ.अनु.परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा द्वारा प्रेषित अपील का वाचन किया गया। डॉ. सिंह ने बताया कि हिंदी सभी भाषाओं की सहोदरा है इसमें सभी भाषाओं को समाहित करने की अपार शक्ति निहित है। हिंदी भाषा में ऊंच–नीच का भाव नही है इसलिए जितना संभव हो सकें हमें हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए एवं हिंदी बोलते समय गर्व महसूस करना चाहिए। कार्यक्रम में निदेशालय के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने भाग लेते हुये पखवाड़े के दौरान आने वाले 15 दिनों में आयोजित किये जाने वाले विभिन्न प्रतियोगिताओं में ज्यादा से ज्यादा सहभागिता का संकल्प लिया गया।

राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा

राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा
दिनांक 14-29 सितम्बर, 2021
निदेशालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु
हिन्दी राजभाषा कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के परिसर में दिनांक 29 सितम्बर, 2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ''आजादी के संघर्ष में हिन्दी की भूमिका'' विषय पर व्याख्यान श्री राजेंद्र चंद्रकांत राय, वरिष्ठ साहित्यकार, जबलपुर द्वारा दिया गया ।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने हिन्दी की सशक्त भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन मे हिन्दी के कवियों और सहित्यकारो के लेखन ने जनमानस को एक दिशा प्रदान की जो बाद में आजादी की मसाल के रूप में प्रज्वल्लित हुई। हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को ज्यादा से ज्यादा महत्त्वता देना चाहिए।

श्री राजेंद्र चंद्रकांत राय, वरिष्ठ साहित्यकार ने कहा कि जो भाषा सबके साथ सामंजस्य बैठा ले वो भाषा ही सबसे समृद्ध होती है, इसीलिए हिन्दी हमेशा प्रथम पंक्ति में पाई जाती है। अपनी भवानाओं और विचारो की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का होना आवश्यक है। व्यक्ति जिस भाषा में सोचता है उसी में सबसे बेहतर अभिव्यक्ति कर पाता है। कार्यशाला में निदेशालय के 80 से ज्यादा अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

मदन मोहन मालवीय

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

अमित शाह (गृह मंत्री)

हिन्दी पखवाड़ा समापन सामारोह
दिनांक - 29 सितम्बर, 2021
आयोजक

हिन्दी पखवाड़ा समापन सामारोह
दिनांक - 29 सितम्बर, 2021

हिन्दी पखवाड़ा समापन सामारोह
आयोजक

हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय में हिन्दी पखवाडा दिनाँक 14–29 सितम्बर, 2021 तक आयोजित किया गया। हिन्दी पखवाडा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. कपिलदेव मिश्रा, कुलपति, रानी दुर्गावती वि.वि. जबलपुर रहे । हिन्दी पखवाड़े के दौरान निदेशालय में सात प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें आलेखन एवं टिप्पण, तात्कालिक निबंध लेखन, हिन्दी शुद्धलेखन, कम्प्यूटर में यूनिकोड पर टाइपिंग, आशुभाषण (तात्कालिक भाषण), क्विज कांटेस्ट एवं वाद–विवाद प्रतियोगिताएं थी । कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र, मुख्य अतिथि प्रो. कपिलदेव मिश्रा, डॉ. पी.के. सिंह एवं श्री बसंत मिश्रा ने माँ सरस्वती को माल्यार्पण कर किया।

मुख्य अतिथि प्रो. कपिलदेव मिश्रा ने कहा कि संसार का कोई भी देश अपनी भाषा की अवहेलना करके प्रगति नही कर सकता। भाषा में अद्भुत शक्ति होती है यह हमें एक दूसरे से जोड़ती है भाषा केवल भाषा नही होती वह समाज, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्र की अस्मिता और उसके भावी लक्ष्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी होती है। हिन्दी सदियों से हमारी सम्पर्क भाषा रही है पूरा विश्व हमारी भाषा की ओर आकर्षित है। श्री मिश्रा ने कहा कि यह निदेशालय एक अनुसंधान संस्थान है, यहां सभी वैज्ञानिक व अधिकारी अपनी–अपनी विशेषज्ञता के आधार पर कार्य कर रहे हैं पर फिर भी हिन्दी के कार्य में या हिन्दी को बढ़ावा देने में सभी की बड़ी रूची है जो कि एक सराहनीय कदम है।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने कहा कि हिन्दी सभी भाषाओं के प्रति सम्मान भाव रखते हुए सबको साथ लेकर चलने की क्षमता रखती है। इसमें सबको समाहित करने की अपार शक्ति निहित है, इसमें बड़े और छोटे का भाव नही है। अतः जितना संभव हो सकें हमें हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए एवं हिंदी बोलते समय गर्व महसूस करना चाहिए। आज हिंदी विश्व के हर कोने में बोली जाने लगी है एवं देश–विदेश के लोग भी हिंदी सीखने में प्रयासरत है। आज भारत में अनेको संस्थान मात्र हिंदी सीखने के लिए खोले गये है जहां दूर–दूर से लोग हिंदी सीखने बड़ी संख्या में आते है।

डॉ. पी.के. सिंह, सह अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कहा कि आज भी हिन्दी को वह स्थान नही मिला जिसकी अधिकारी वह है। हमें सहृदय होकर हमारी देश की जनभाषा, हमारी अपनी राजभाषा को अपने निजी कार्यों से लेकर कार्यालय के कामकाज में लाने का संकल्प लेना होगा तभी राजभाषा हिन्दी को उसका सम्मानीय स्थान मिल सकेगा। इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रभारी श्री बसंत मिश्रा ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया। प्रोत्साहन योजना के तहत निदेशालय के वर्ष भर में 20,000 शब्दों से अधिक हिन्दी लिखने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों को वरीयता क्रम के आधार पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय, नगद पुरस्कार एवं प्रतियागिताओ के विजेताओ को प्रशस्ति पत्र निदेशक एवं अतिथियों के कर कमलों से प्रदान किये गये। इस अवसर पर निदेशालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिन्दी पत्रिका '' तृण संदेश '' के 16वें अंक का विमोचन भी किया गया।

निदेशालय के समस्त अधिकारियों कर्मचारियों हेतु
हिन्दी राजभाषा कार्यशाला
दिनांक
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हिन्दी राजभाषा कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के परिसर में दिनांक 13 अक्टूबर, 2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर "उत्तर पूर्व राज्यो की प्रगति में उर्जा की महत्त्वता" विषय पर व्याख्यान श्री राधाकृष्णन, चेयरमैन, त्रिपुरा विद्युत नियामक आयोग, द्वारा प्रदान किया गया। निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने कहा कि आज विद्युत का उपयोग हमारी दिनचर्या का अंग हो गया है। पारम्परिक तरीको से उत्पादित विद्युत दिनों दिन बढ़ती मॉग को पूरा करने में कम पडती जा रही है इसलिए प्रकृति में उपलब्ध विभिन्न उर्जा स्त्रोतो का उपयोग नितांत आवश्यक हो जाता है। कृषि की सारी तकनीकों के सुचारू संचालन हेतु ऊर्जा की आवश्यकता होती है, बिना ऊर्जा के कृषि कार्य संभव नही है।

श्री डी. राधाकृष्णन अध्यक्ष, त्रिपुरा विद्युत नियामक आयोग ने कहा कि भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रो में निवास करती है। वर्तमान समय में देश की प्रगति को गति प्रदान करने यह आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उर्जा की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जायें। आज भी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच प्रति व्यक्ति उर्जा की खपत में काफी अंतर है। आज भी सुदूर उत्तर पूर्व का क्षेत्र या अन्य क्षेत्रो के ग्रामीण परिवार प्राकृतिक संसाधनो से उत्पन्न उर्जा का उपयोग करते है जैसे लकड़ी, गोबर, सौर उर्जा, जबकि शहरी क्षेत्रो में इन्ही कार्यो हेतु करीब 90 प्रतिशत परिवार विद्युत तथा 10 प्रतिशत केरोसीन पर निर्भर है। हमें आज के दौर में सौर उर्जा, पवन उर्जा, जैव ईधन जैसे प्राकृतिक उर्जा स्त्रोतो को अपनाने पर जोर देना चाहिये।

प्रधानमंत्री कुसुम योजना यानि प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान के संबंध में जानकारी देते हुए उन्होने बताया कि प्रधानमंत्री कुसुम योजना के जरिए किसानों की आय मे तेजी से वृद्धि हो सकती है। किसान अपने खेत की अनुपजाऊ जमीन पर खुद या किसी निवेशक के साथ सोलर संयंत्र की स्थापना करके अपने उपयोग के पश्चात् अतिरिक्त बिजली बेचकर नियमित आय के स्त्रोत बढ़ा सकता है। कार्यशाला में निदेशालय के 80 से ज्यादा अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिस्सा लिया ।

> हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।
>
> पुरुषोत्तम दास टंडन

निदेशालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु
हिन्दी राजभाषा कार्यशाला
दिनांक:
आयोजक

हिन्दी राजभाषा कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के परिसर में दिनांक 20 नवम्बर, 2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर "जैविक कृषि–इतिहास एवं वर्तमान परिस्थिति" विषय पर व्याख्यान डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा दिया गया। निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने कहा कि पुरातन काल से हम जैविक पद्धति से विभिन्न फसलो का उत्पादन करते आ रहे है परन्तु वर्तमान परिस्थिति में खाद्यान्न की माँग की पूर्ति हेतु हम अधिक उत्पादन वाली किस्मो को अपनाने लगे हैं जिससे रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशियों एवं खरपतवारनाशियों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में करना पड़ता है। परन्तु मृदा एवं पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण, भूमि की उपजाऊ क्षमता, सिंचाई अंतराल में वृद्धि व फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने के लिये जैविक खेती को अपनाना भविष्य की आवश्यकता होती जा रही है ।

डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक ने कहा कि जैविक कृषि एक ऐसी खेती है जिसमें दीर्घकालीन व स्थिर उपज प्राप्त करने के लिए कारखानों में निर्मित रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशियों व खरपतवारनाशियों तथा वृद्धि नियन्त्रक का प्रयोग न करते हुए जीवांशयुक्त खादों का प्रयोग किया जाता है जिससे मृदा एवं पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण होता है। कृषकों द्वारा जैविक खेती करने से भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि होती है, सिंचाई का अंतराल बढता है, रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है और फसलों की उत्पादकता अधिक होने व जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है।

कार्यशाला में निदेशालय के 80 से ज्यादा अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

हिन्दी अब सारे देश की राष्ट्रभाषा हो गई है, उस भाषा का अध्ययन करने और उसकी उन्नति करने में गर्व का अनुभव करना चाहिए।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

निदेशालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु
हिन्दी राजभाषा कार्यशाला
दिनांक : 08.12.2021

हिन्दी राजभाषा कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के परिसर में दिनांक 08 दिसम्बर, 2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर "राजभाषा प्रयोग में हमारा योगदान" विषय पर व्याख्यान श्री राज रंजन श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी, पश्चिम मध्य रेल व सचिव नराकास कार्यालय क्रमांक–02 जबलपुर द्वारा दिया गया।

निदेशालय के निदेशक डॉ.जे.एस.मिश्र द्वारा हिन्दी की सशक्त भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अपनी भवानाओं और विचारो की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का होना आवश्यक है, इसके लिए हिन्दी हमेशा प्रथम पंक्ति में पाई जाती है। हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को ज्यादा से ज्यादा महत्व देना चाहिए।

श्री राज रंजन श्रीवास्तव ने कहा कि जो भाषा सबके साथ सामंजस्य स्थापित करे वो भाषा ही सबसे समृद्ध होती है, व्यक्ति जिस भाषा मे सोचता है उसी में सबसे बेहतर अभिव्यक्ति कर पाता है। राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग न केवल अभिव्यक्ति को सशक्त बनाता है बल्कि राष्ट्र को समृद्ध बनाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। हमारे देश के अलावा विश्व के अनेक देशो में हिन्दी एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बन रही है। कार्यशाला में निदेशालय के 80 से ज्यादा अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि का स्वागत निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र व डॉ. पी.के. सिह, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

हिन्दी को भारत की भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज ही में एकता स्थापित हो सकती है।

केशवचंद सेन

भारत की अखण्डता और व्यक्तित्व बनाए रखने के लिए हिंदी का प्रचार अत्यन्त आवश्यक है।

महाकवि शंकर कुरूप

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 15 मार्च, 2021 को भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सभागार में समस्त कुशल सहायी कर्मियों हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री आर.एस. उपाध्याय, मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा "रबी, खरीफ एवं जायद की फसलों में खरपतवार प्रबंधन" विषय पर वक्तव्य दिया गया।

डॉ. जे.एस. मिश्र निदेशक ने अपने उद्बोदन में हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि आज की कार्यशाला का विषय "रबी, खरीफ एवं जायद की फसलों में खरपतवार प्रबंधन" संस्थान से जुड़े हुए कार्यो से संबंधित विषय है इससे प्राप्त जानकारी सभी कर्मचारियों हेतु बहुत उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं लाभदायक रहेगी। निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा समय–समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करने से हिन्दी प्रचार–प्रसार बढ़ाने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त होती रहती है जो प्रशंसनीय है।

कार्यक्रम के वक्ता श्री आर.एस. उपाध्याय ने अपने वक्तव्य में बताया कि भारत में उगाई जाने वाली फसलों में रबी, खरीफ एवं जायद फसलों का महत्वपूर्ण स्थान है। रबी की मुख्य फसलें जिसमें–गेहूं, चना, मटर, अलसी, सरसों तथा खरीफ की मुख्य फसलें जैसे– धान, सोयाबीन, तिल, ज्वार, बाजरा एवं जायद की फसलों में मूंग, उड़द आदि है। सभी सीजन की फसलों में विभिन्न प्रकार के खरपतवारों द्वारा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जिसकी रोकथाम समयानुसार की जानी आवश्यक होती है। फसलों में विभिन्न पद्धतियों से खरपतवारों का नियंत्रण किया जाता है। जिसमें कल्चरल, यांत्रिक, रासायनिक तथा जैविक पद्धतियों का उपयोग कर खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है। वैज्ञानिको द्वारा अनुसंशित पद्धतियों के सही उपयोग से लाभकारी परिणाम प्राप्त होते है। जैसे रसायनों का सही समय पर उपयोग, रसायनों की मात्रा, पानी की मात्रा तथा नोजल का चुनाव आदि मुख्य है। उन्होने बताया कि फसलों में खरपतवारों के प्रबंधन के लिए उचित रसायनों का उपयोग लाभकारी होता है। उपर्युक्त तीनों सीजन की फसलों में खरपतवार नियंत्रण के विविध आयामों को वक्ता द्वारा विस्तार से बताते हुए उनके उपयोग के समय सावधानी रखने हेतु भी कहां गया। संरक्षित खेती के विषय में विस्तार से बताते हुए उन्होने कहा कि फसलों के अवशेषो को सुरक्षित तरीके से यांत्रिक विधियों का उपयोग कर खेतो मे उपयोग करना लाभदायक है जिससे भूमि की उर्वरता में बढ़ोत्तरी के साथ ही साथ अगली फसल हेतु बुवाई के समय तथा पानी की बचत होती है। अवशेषो को जलाने पर मिट्टी की उर्वरता में नुकसान देखा गया है संरक्षित खेती में मुख्य रूप से बुवाई में उपयोगी हैप्पी सीडर के विषय में भी जानकारी प्रदान की गई एवं कई महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गये। अंतिम चरण में उनके द्वारा सभागार में उपस्थित सदस्यों के द्वारा विषय से संबंधित पूछे गये प्रश्नो का उत्तर देते हुए समाधान किया गया।

निदेशालय के समस्त अधिकारियों /कर्मचारियों हेतु
हिन्दी राजभाषा कार्यशाला
दिनांक : 21/06/2021
आयोजक
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा दिनांक 21 जून, 2021 को परिसर में समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. आर.के. नेमा, कृषि अभियांत्रिकीय संकाय, जे.एन.के.वी.वी. जबलपुर द्वारा "वर्तमान संक्रमण काल में योग का महत्व" विषय पर वक्तव्य दिया गया। जिसमें अत्याधिक संख्या में निदेशालय के कर्मचारियों ने भाग लिया।

निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने अपने उद्‌बोदन में हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि आज की कार्यशाला का विषय बहुत महत्वपूर्ण व रोचक है इससे प्राप्त जानकारी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु बहुत उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं लाभदायक रहेगी। निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा समय–समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करने से हिन्दी प्रचार–प्रसार बढ़ाने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त होती है जो प्रशंसनीय है।

कार्यक्रम के वक्ता डॉ. आर.के. नेमा ने अपने वक्तव्य में वर्तमान महामारी के समय में रोजमर्रा के व्यस्ततम जीवन शैली और स्वस्थ रहने के तरीके में योग की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी लोगो से अपने दैनिक दिनचर्या में योग को अपनाने की अपील की ताकि व्यक्ति तनाव रहित हो कर स्वस्थ तन मन के साथ अपने दायित्वों को तत्परता के साथ सम्पादित कर सकें। स्वस्थ रहने के लिए संयमित जीवन शैली का होना आवश्यक है और इसके लिए नियमित योग करना जरूरी है। योग की विभिन्न क्रियाएं शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है तथा अनियमित दिनचर्या से होने वाले संभावित रोगों से मुक्त रखने में सहायक होती हैं। यदि व्यक्ति तन एवं मन से योग करके स्वस्थ रहेगा तो उसकी कार्य क्षमता भी बढ़ जायेगी। ओम से ही ब्रह्मांड की संरचना हुई है। ओम का उच्चारण प्रतिदिन प्रातः काल 10 मिनट किया जाए तो शरीर की सारी मांसपेशियों के ब्लॉकेज खुल जाते हैं मानसिक रूप से व्यक्ति स्वस्थ होने लगता है ज्ञान बुद्धि का उदय होता है मन में एकाग्रता बढ़ती है शरीर के अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि होती है।

डॉ. आर.के. नेमा ने अपने वक्तव्य में योग के विषय में समस्त जानकारी देते हुए योग के विभिन्न आसनों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की एवं कई महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। अंतिम चरण में उपस्थित सदस्यों के द्वारा विषय से संबंधित पूछे गये प्रश्नो का उत्तर देते हुए समाधान किया गया।

Director DWR
Daud Raza Khan
12345
Dr. P.K. Singh DWR ...
Shashi Raghuwa...
Vaibhav
OPPO A37f
Dr. KK Barman
Dr RP Dubey
laurel_sprout
12345
VK Choudhary D...
Atul Singh Rajpoot
Pijush Kanti Muk...
Sreekanth Dasari
c521522f
S K Parey
Sandeep Dhagat
Dr Basamt Mishra
जैनू प्रसाद
Raj kuamr Armo
Bhagunte Chadar

‘खरपतवार प्रबंधन की आवश्यकता और महत्व’ विषय पर हितधारकों के लिए वेबिनार का आयोजन

खरपतवारों का प्रबन्धन खेती किसानी की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है, फसलों में खरपतवारों से होने वाली हानि को रोकने और कृषकों को फसलो के उत्पादन का पूर्ण लाभ प्राप्त कराने में खरपतवार प्रबन्धन बहुत महत्वपूर्ण है। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा खरपतवार प्रबन्धन के आवश्यक पहलुओं को कृषकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से "फसलों में खरपतवार प्रबंधन एवं महत्व" विषय पर कृषक वेबिनार श्रृंखला का शुभांरभ निदेशालय परिसर में 12 फरवरी, 2021 को किया गया। कोविड–19 की वैश्विक महामारी का ध्यान रखते हुए प्रत्येक माह कृषि / बागवानी संबधित विभिन्न विषयों पर कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किये जायेंगे। कृषक वेबिनार में मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र, राजस्थान से 200 कृषक (महिला / पुरुषो) ने भाग लिया।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि वैसे तो आज भारत में अनेकों देशी एवं विदेशी खरपतवार बहुतायत में मिल रहे हैं तथा इनके नियंत्रण हेतु अनेक प्रकार की विधियों को अपनाया जा रहा है। खरपतवार नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर देते हुए डॉ. मिश्र ने बताया कि वर्तमान में विभिन्न खरपतवारो से आज भारत के कृषि उत्पादन में लगभग एक तिहाई की कमी हो रही हैं। 21वीं सदी के प्रारंभिक छह वर्षो में कृषि उत्पादन की औसत वृद्धि दर मात्र 2 प्रतिशत से कम होना बड़ी चिंता का विषय बन गया हैं जिससे देश का सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी प्रभावित हो रहा हैं। देश में खेती की पैदावार लगभग सभी फसलों में या तो स्थिर हो गयी हैं या उसमें कमी आ रही हैं। देश में फसलो के उत्पादन में आ रही इस कमी को उन्नत कृषि तकनीक एवं खरपतवार प्रबंधन के माध्यम से पूरा करने के साथ ही खाद्यान्न उत्पादन में 20 से 25 प्रतिशत की वृद्धि की जा सकती है। डॉ. मिश्र ने आगे कहा कि खरपतवारों के प्रबन्धन की विभिन्न तकनीकों की समुचित जानकारी एवं इसके प्रति जागरूकता कृषको के खेतो तक पहुंचाना अति आवश्यक है। इस हेतु वेबिनार के माध्यम से मोबाईल द्वारा उन्नत तकनीक के प्रचार प्रसार के अच्छे परिणाम सामने आयेगें।

कृषक वेबिनार श्रृंखला के संयोजक डॉ. पी.के. सिंह ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि कृषि उत्पादन स्तर को ऊंचा करने के लिए उन्नत बीज, उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन समन्वित कीट–रोग प्रबंधन के साथ–साथ उचित खरपतवार प्रबंधन की विशेष आवश्यकता है। सामान्यतः यह देखा गया है कि उपरोक्त तकनीकों का प्रयोग करते समय खरपतवार प्रबंधन पर उचित ध्यान नही दिया जाता। जबकि खरपतवार कृषि उत्पादन में एक बड़ा अवरोधक है जिससे न केवल फसल उत्पादन को नुकसान होता है बल्कि गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। अतः इस कोरोना कॉल में किसानों तक तकनीकों को सरल शब्दों में पहुचाने के लिये कृषक वेविनार का आयोजन एक महत्वपूर्ण पहल है, जिससे कृषक अपने मोबाईल के माध्यम से जुडकर इसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकते है तथा अपने प्रश्नों का विशेषज्ञों द्वारा समाधान भी प्राप्त कर सकते है। कार्यक्रम में निदेशालय के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी / कर्मचारी उपस्थित थे तथा कृषकों के प्रश्नों का उत्तर डॉ. आर.पी. दुबे एवं डॉ. वी.के. चौधरी द्वारा दिया गया।

KAMBOJ

उत्तर प्रदेश के कृषकों के लिए प्रशिक्षण-सह-भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

निदेशालय ने 18 फरवरी, 2021 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वित्तपोषित कृषि विस्तार और प्रौद्योगिकी पर आत्मा कार्यक्रम के अंतर्गत एक कृषक प्रशिक्षण–सह–भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के अधिकारियों, प्रगतिशील किसानों और गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों सहित 55 सदस्यों की एक टीम ने भाग लिया। प्रतिभागियों के ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए, खरपतवार प्रबंधन विधियों, संरक्षित कृषि एवं उर्वरक प्रबंधन जैसे विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए। विभिन्न फसलों पर खरपतवार प्रबंधन तकनीकियों के प्रभाव तथा बेहतर कृषि उपकरणों को दिखाने के लिए कृषकों को तकनीकी पार्क एवं अनुसंधान फार्म का भ्रमण कराया गया। वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों के साथ परस्पर चर्चा की और किसानों द्वारा व्यक्त की गई शंकाओं का निराकरण किया।

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण
किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया ।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

हिंदी किसी एक प्रान्त की भाषा नही बल्कि देश में सर्वत्र बोली
जाने वाली भाषा है।

विलियम कैरी

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक
भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

INVASIVE ALIEN WEEDS
MAJOR WEEDS OF INDIA

विद्यार्थियों के भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

निदेशालय द्वारा शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस महाविद्यालय के बीएससी पर्यावरण विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने 22 फरवरी, 2021 को निदेशालय का भ्रमण किया। विद्यार्थियों को खरपतवार प्रबंधन तकनीकी पार्क, जलीय खरपतवारों के लिए अनुसंधान तालाब, खरपतवार कैफेटेरिया, अनुसंधान क्षेत्र, फाइटोरेमेडिएशन यूनिट, वर्मी कम्पोस्टिंग यूनिट, फेस फैसिलिटी, ओटीसी कक्ष, लाइसीमीटर इकाई, खरपतवार प्रबंधन सूचना केंद्र और प्रयोगशालाएं दिखाई गई। विद्यार्थियों को फाइटोरेमेडिएशन, वर्मी कम्पोस्टिंग एवं संरक्षित कृषि के लाभों, जलवायु परिवर्तन अनुसंधान में ओटीसी और फेस फैसिलिटी का उपयोग एवं विभिन्न खरपतवार प्रबंधन तरीकों, जैसे कल्चरल, यांत्रिक, रासायनिक एवं जैविक विधियों, जिन पर निदेशालय में शोध किया जा रहा है उनके बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रयोगशालाओं का भ्रमण करते समय विद्यार्थियों को पीसीआर मशीन, स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, फ्लेम फोटोमीटर, जेल्डाल उपकरण, परमाणु अवशोषण स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, माइक्रोवेव पाचन प्रणाली, गैस क्रोमैटोग्राफी प्रणाली और अन्य उपकरणों को प्रदर्शित किया गया। जिसे देख और समझ कर विद्यार्थियों द्वारा ज्ञान प्राप्त किया गया।

राजभाषा का हमेशा मान होना चाहिए
मातृभाषा का उचित सम्मान होना चाहिए
काम हिंदी में करें यह ध्यान होना चाहिए
राष्ट्र की हर शक्ति का उत्थान होना चाहिए

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें कोई दो राय नहीं।

पं. जवाहर लाल नेहरू

Harish Kashyap
Virender Pratap...

''प्रशिक्षण सह कृषक आवास'' का उद्घाटन

निदेशालय के नवनिर्मित ''प्रशिक्षण सह कृषक आवास भवन'' का उद्घाटन 26 फरवरी 2021 को केन्द्रीय केबिनेट कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री माननीय श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी के द्वारा वर्चुअल माध्यम से किया गया। इस अवसर पर उद्बोधन में उन्होने बताया कि वर्ष 2050 तक भारत की जनसंख्या 160 करोड़ से अधिक होने का अनुमान है एवं खाद्यान्न की वार्षिक जरूरत भी 400 मिलियन टन तक बढ़ने की संभावना है, जिससे कृषि क्षेत्र में न्यूनतम 4% वार्षिक वृद्धि की आवश्यकता होगी। पिछले कुछ सालों में, देश में कृषि अनुसंधान द्वारा सृजित की गई प्रौद्योगिकियाँ अपनाने से कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। इसके बावजूद मृदा, जल, जलवायु, जैव विविधता, अनुसंधान में बदलाव आज भी चुनौती बने हुए हैं। देश में फसलो के उत्पादन में आ रही कमी को उन्नत कृषि तकनीक एवं खरपतवार प्रबंधन के माध्यम से पूरा करने के साथ ही खाद्यान्न उत्पादन में 20 से 25 प्रतिशत की वृद्वि की जा सकती है। कृषि में उभरती चिंताओं, चुनौतियों को देखते हुए और फसल उत्पादन स्तर बढ़ाने के लिए खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण हेतु निदेशालय द्वारा लगातार अनुसंधान किया जा रहा है। साथ ही, विकसित तकनीकों को किसानों व अन्य संबंधित लोगों तक पहुंचाने के लिए वृहद् प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस नवनिर्मित प्रशिक्षण–सह–कृषक आवास भवन के प्रयोग में आने से प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और भी अधिक गति दी जा सकेगी।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण माननीय श्री कैलाश चौधरी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि कृषि उत्पादन स्तर को ऊंचा करने के लिए उन्नत बीज, उर्वरक, सिंचाई प्रबंधन एवं समन्वित कीट–रोग प्रबंधन के साथ–साथ उचित खरपतवार प्रबंधन की विशेष आवश्यकता होती है। इस भवन के उद्घाटन से मुझे पूरा विश्वास है कि इस सुविधा के उपयोग द्वारा ज्यादा से ज्यादा किसानों को खरपतवार प्रबंधन के विभिन्न आयामों पर प्रशिक्षण देकर उन्हें और भी शिक्षित एवं जागरूक किया जा सकेगा। जिससे किसानों को कम खर्च में वैज्ञानिक तरीके से खरपतवार प्रबंधन पर अधिकतम उत्पादन एवं आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि कृषि एवं गैर कृषि क्षेत्रों में खरपतवार बड़ी मात्रा में हानि पहुंचाते हैं। इनकी रोकथाम न होने पर हमारी फसलों की उपज में एक तिहाई की हानि हो सकती है। एक अनुमान के तहत कुल हानि लगभग एक लाख करोड़ रुपयों की होती है। फसलों में परजीवी खरपतवारों का प्रबंधन भी एक चुनौती है। इसके अलावा देश में जलीय खरपतवारों की भी गंभीर समस्या है। इसी को ध्यान मे रखते हुए खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, की स्थापना 22 अप्रैल 1989 में हुई थी, जो कि विश्व में एकमात्र ऐसा संस्थान है जहाँ खरपतवार से संबंधित विभिन्न अनुसंधान किये जाते हैं। अपनी स्थापना के बाद से ही यह निदेशालय निरंतर बुनियादी और रणनीतिक शोध एवं प्रसार द्वारा देश में उगने वाली खाद्यान फसलों में, विभिन्न फसल प्रणालियों में, सब्जियों में, बागवानी फसलों में आने वाले खरपतवार तथा जलीय खरपतवार प्रबंधन की उन्नत तकनीक उपलब्ध करवा रहा है।

नव निर्मित ''प्रशिक्षण–सह–कृषक आवास भवन'' के उद्घाटन अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन डॉ. एस.के. चौधरी, विभिन्न संस्थानो के निदेशक, कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा निदेशालय के समस्त वैज्ञानिक तथा सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

International Women's Day
8 March 2021

International Women's Day
8 March 2021

International Women's Day
8 March 2021

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन 08 मार्च, 2021 को फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत चयनित गांवों उमरिया चौबे एवं बड़ौदा तथा जबलपुर के आसपास के इलाकों से महिला कृषकों को आमंत्रित करके किया गया। इस अवसर पर डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक ने महिला कृषकों का स्वागत किया साथ ही इस दिन के महत्व के बारे में बताया। डॉ पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, आयोजन समिति ने भारतीय कृषि में महिलाओं की भूमिका के बारे में चर्चा की। डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख अन्वेषणकर्ता, फार्मर फर्स्ट परियोजना ने इन चयनित गांवों की महिलाओं द्वारा मशरूम की खेती, मुर्गी पालन और दूध उत्पादन में हासिल की गई सफलता के बारे में चर्चा की। इन गांवों की तीन महिला किसानों को स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती आशा दाहिया, सरपंच, अचलौनी पौड़ी, जबलपुर भी उपस्थित थीं। उन्होंने महिला किसानों को स्वयं सहायता समूह बनाकर उद्यमी के रूप में सामूहिक रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।

सुमित्रानंदन पंत

भारतीय भाषाएं नदियां है और हिंदी महानदी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिन्दी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है, यह सबकी सहोदरा है।

महादेवी वर्मा

कृषक कार्यशाला
विषयः मध्य प्रदेश में सब्जी उत्पादन स्तर बढ़ाने हेतु
खरपतवार प्रबंधन एवं उन्नत तकनीकी प्रयोग
दिनांकः 09 मार्च, 2021
समयः प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक
प्रायोजकः
AgroStar
आयोजकः

कृषक कार्यशाला
विषयः मध्य प्रदेश में सब्जी उत्पादन स्तर बढ़ाने हेतु
खरपतवार प्रबंधन एवं उन्नत तकनीकी प्रयोग
दिनांकः 09 मार्च, 2021
प्रायोजकः
AgroStar
आयोजकः

ICAR-DWR
कृषक कार्यशाला
विषयः मध्य प्रदेश में सब्जी उत्पादन स्तर बढ़ाने हेतु
खरपतवार प्रबंधन एवं उन्नत तकनीकी प्रयोग
दिनांकः 09 मार्च, 2021
समयः प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक
प्रायोजकः
AgroStar
आयोजकः
भा.कृ.अनु.प. - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय
ICAR - Directorate of Weed Research, Jabalpur
ISO 9001 : 2015 Certified

"सब्जियों में खरपतवार प्रबंधन" विषय पर एग्रोस्टार द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

कृषकों को सब्जियों में खरपतवार प्रबंधन तकनीकियों से अवगत कराने हेतु एग्रोस्टार द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 09 मार्च, 2021 को किया गया। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने कृषकों को सब्जियों में खरपतवारों की भयावह समस्या से अवगत कराया तथा उसमें खरपतवार प्रबंधन की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कृषकों से आह्वान किया कि वे इस कार्यशाला से खरपतवार प्रबंधन की आधुनिक तकनीकियाँ सीखकर उन्हें अपनाएँ एवं सब्जियों का उत्पादन बढ़ाएं। इस अवसर पर डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने किसानों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के विषय में सभी कृषकों को अवगत कराया। वर्तमान में सब्जियों की उत्पादन लागत कम करने हेतु कई आधुनिक विधियों को अपनाने पर उन्होने जोर दिया।

डॉ. देवराज आर्या, वाइस प्रेसिडेन्ट, फार्म सोलुशन एवं कॉर्पोरेट अफेयर्स एग्रोस्टार ने कृषकों को वैज्ञानिक कृषि समाधान सुनिश्चित करने के लिए एग्रोस्टार एप से अवगत कराया, जो विभिन्न एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन, उन्नत प्रबंधन एवं पोषक तत्वों के प्रबंधन पर किसानों को राष्ट्रीय स्तर पर जानकारी उपलब्ध कराता है। एग्रोस्टार के ही डॉ. तुषार भट्ट ने रोग एवं कीट प्रबंधन पर विस्तार से बताया। निदेशालय के डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक ने सब्जियों में खरपतवार प्रबंधन पर विस्तार से चर्चा की साथ ही किसानों की समस्याओं का समाधान भी किया। उसके पश्चात् किसानों ने भी परिचर्चा में भाग लिया तथा निदेशालय एवं एग्रोस्टार के वैज्ञानिकों से अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम में जबलपुर के आस पास के गाँवों के कृषक एवं एग्रोस्टार द्वारा चयनित मध्य प्रदेश के लगभग 75 किसानों ने भाग लिया। परिचर्चा के पश्चात् कृषकों को निदेशालय के प्रक्षेत्र का भ्रमण भी कराया गया।

किसी भाषा की उन्नति का पता उसमें प्रकाशित हुई पुस्तकों की संख्या तथा उनके विषय के महत्व से जाना जा सकता है।

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री

बायोटेक किसान हब परियोजना
कृषक प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र भ्रमण

किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह-भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

दमोह जिले के 50 प्रगतिशील कृषकों ने दिनांक 06 मार्च, 2021 को डी.बी.टी. वित्त पोषित बायोटेक किसान परियोजना के तहत् खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम में भाग लिया। निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने बलारपुर एवं कुम्हारी गांव से आये कृषको के सामने खरपतवार प्रबंधन के महत्व के बारे में विस्तार से अपनी बात रखी। डॉ. मिश्र ने बताया कि किस तरह खरपतवारों के द्वारा हमारी फसलों को स्थान, पानी, पोषक तत्व एवं सूर्य के प्रकाश के लिए संघर्ष करना पड़ता है जिससे हमारी फसलों को प्रत्यक्ष रूप से नुकसान उठाना पड़ता है इसके साथ–साथ खरपतवार कीट व्याधियों एवं चूहों को आश्रय देते हैं जिससे हमारी फसलों को अप्रत्यक्ष रूप से हानि होती हैं अतः खरपतवारों को समय रहते उचित विधियों के द्वारा समन्वित रूप से प्रबंधन कर फसलों में हो रही हानि को कम कर सकते हैं।

उन्होने यह भी बताया कि किसान भाई फसल कटाई के पश्चात् फसल अवशेषों में आग लगा देते हैं जिससे मृदा एवं पर्यावरण स्वास्थ्य में विपरीत प्रभाव पड़ता हैं अतः संरक्षित कृषि को अपनाकर उपरोक्त समस्या से निजात पाया जा सकता हैं एवं मृदा की गुणवत्ता को भी बढ़ाया जा सकता हैं। कार्यक्रम के समन्वयक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी.के. सिंह ने कार्यक्रम तथा परियोजना में चलाये जा रहे विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया एवं धान और सोयाबीन के साथ साथ गेंहू एवं मसूर में संरक्षित कृषि आधारित प्रदर्शन एवं उससे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से चर्चा की। डॉ. सिंह ने किसानों का आहवान किया कि निदेशालय प्रक्षेत्र का भ्रमण कर चल रही विभिन्न अनुसंधान संबंधित गतिविधियों का जायज़ा लें एवं अपनी आवश्यकता अनुरूप तकनीकों का चयन कर उसे अपनाये एवं अधिक से अधिक लाभ अर्जित करें।

इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया जिसमें निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. के.के. बर्मन ने मृदा स्वास्थ्य को कैसे बढ़ाया जाये तथा इसका किस प्रकार से प्रबंधन कर अधिक से अधिक फसल उत्पादन प्राप्त किया जाये के बारे में बताया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी.के. चौधरी ने फसलों में खरपतवार प्रबंधन के विभिन्न आयामों के बारे में बताया साथ ही साथ उन्नत फसल प्रबंधन से कैसे अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. चौधरी ने निदेशालय के प्रक्षेत्र में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यो के बारे में भ्रमण के दौरान विस्तार से बताया। कार्यक्रम के दौरान इंजी. चेतन सी.आर., वैज्ञानिक ने किसानों को कम लागत वाले कृषि उपकरणों एवं यंत्रों के बारे में से बताया। विशेष रूप से खरपतवारनाशियों के उपयोग हेतु किस प्रकार की नोजल तथा प्रति एकड़ पानी की मात्रा के साथ निदेशालय के विभिन्न यंत्रों के बारे में बताया। कार्यक्रम में किसानों ने फसल एवं सब्जी उत्पादन में आ रही विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चा की जिसका निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा समाधान बताया गया।

बायोटेक किसान हब परियोजना
कृषक प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र भ्रमण

ICAR-DWR
बायोटेक किसान हब परियोजना
डी.बी.टी., भारत सरकार वित्त पोषित के अंतर्गत
कृषक प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र भ्रमण
दिनांक - 10.03.2021
आयोजक
भाकृअनुप - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय,
जबलपुर (म.प्र.)

किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह-भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

हटा तहसील जिला दमोह के 50 प्रगतिशील कृषकों ने दिनांक 10 मार्च, 2021 को डी.बी.टी. वित्त पोषित बायोटेक किसान परियोजना के तहत खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने मोहास, कुम्हारी, कुल्वा एवं पाडुवा गांव से आये कृषक भाइयों के सामने खरपतवार प्रबंधन के महत्व के बारे में कार्यक्रम के दौरान विस्तार से अपनी बात रखी। डॉ. मिश्र ने बताया कि खरपतवारों से हमारी प्रमुख दस फसलों में लगभग 70 लाख करोड़ रुपये तक का नुकसान प्रत्यक्ष रूप से होता है। यदि इससे होने वाले अन्य नुकसान को भी जोड़ा जाये तो यह बहुत अधिक हो जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि खरपतवार न केवल फसल उत्पादन में बल्कि बागवानी में, फलोत्पादन के साथ–साथ गैर फसलीय क्षेत्रों में भी नुकसान पहुँचाते है। अतः खरपतवारों को सही समय में उचित तरीकों द्वारा प्रबंधन करने से खरपतवार से होने वाले नुकसान को कम कर सकते है। साथ ही साथ डॉ. मिश्र ने यह भी बताया कि हमें फसलों की नरवाई को जलाने से बचना चाहिए एवं आवश्यकता के अनुसार नरवाई को उपयोग कर अतिरिक्त अवशेष को खेतों में ही रखना चाहिए। इससे सुक्ष्मजीवों की संख्या में वृद्धि होती है तथा मृदा की गुणवत्ता में वृद्धि करता है एवं लम्बी अवधि तक इस विधि का उपयोग कर मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाने के साथ–साथ पर्यावरण को हो रही हानि को भी कम कर सकते है।

कार्यक्रम के समन्वयक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी.के. सिंह ने कार्यक्रम तथा परियोजना में चलाये जा रहे विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया एवं गेंहू एवं मसूर में संरक्षित कृषि आधारित प्रदर्शन एवं उससे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से चर्चा की। इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया जिसमें निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. के.के. बर्मन ने मृदा स्वास्थ्य का फसल उत्पादन में महत्व एवं किन विधियों से मृदा स्वास्थ्य को बनाये रखा जाये के बारे में बताया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी.के. चौधरी ने इस दौरान संरक्षित कृषि एवं खरपतवार प्रबंधन के विभिन्न उन्नत आयामों पर कृषकों को जानकारी प्रदान कर उसका प्रयोग अपने खेतों पर करने की अपील की। डॉ. चौधरी द्वारा कृषको को निदेशालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रम, प्रदर्शन तथा बीज उत्पादन के बारे में भी जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम के दौरान इंजी. चेतन सी.आर., वैज्ञानिक ने किसानों को कम लागत वाले कृषि उपकरणों एवं यंत्रों के बारे में विस्तार से बताया। विशेष रूप से खरपतवारनाशियों के उपयोग हेतु किस प्रकार की नोजल तथा प्रति एकड़ पानी की मात्रा के साथ निदेशालय के विभिन्न यंत्रों के बारे में बताया। कार्यक्रम में किसानों ने फसल एवं सब्जी उत्पादन में आ रही विभिन्न समस्याओं के बारे में बताया जिसका निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा समाधान बताया गया। इस दौरान कृषकों को निदेशालय एवं कृषि यांत्रिक कार्यशाला का भी भ्रमण कराकर जानकारी प्रदान की गई।

बायोटेक किसान हब परियोजना
डी.बी.टी., भारत सरकार वित्त पोषित के अंतर्गत
कृषक प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र भ्रमण
दिनांक : 19-03-2021
आयोजक
भाकृअनुप - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय,
जबलपुर (म.प्र.)

किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह-भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

होशंगाबाद जिले के बावई तहसील के 40 प्रगतिशील कृषकों ने दिनांक 19 मार्च, 2021 को डी.बी.टी. वित्त पोषित बायोटेक किसान परियोजना के तहत खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने शुक्करवाडा, निमसाडिया, कोठारिया एवं साकेत गांव से आये कृषको के समक्ष खरपतवार प्रबंधन के महत्व तथा समन्वित कीट प्रबंधन, खाद एवं उर्वरक का समुचित उपयोग के बारे में कार्यक्रम के दौरान विस्तार से बात रखी। डॉ. मिश्र ने बताया कि किस तरह खरपतवारों के द्वारा हमारी फसलों का स्थान, पानी, पोषक तत्व एवं सूर्य के प्रकाश के लिए संघर्ष करना पड़ता है। जिससे हमारी फसलों को प्रत्यक्ष रूप से नुकसान उठाना पड़ता है इसके साथ–साथ खरपतवारों को समय रहते उचित विधियों के द्वारा समन्वित रूप से प्रबंधन कर फसलों में हो रही हानि को कम कर सकते है। डॉ. मिश्र ने किसानों को फसल उत्पादन के साथ–साथ बागवानी, दुग्ध उत्पादन, मछलीपालन तथा खाद्य प्रसंस्करण कर अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने के बारे में बताया। डॉ. मिश्र ने यह भी बताया कि हमें फसलों की नरवाई को जलाने से बचना चाहिए एवं आवश्यकता के अनुसार नरवाई को उपयोग कर अतिरिक्त अवशेष को खेतों में ही रखना चाहिए। इससे सूक्ष्मजीवों की संख्या में वृद्धि होती है, तथा मृदा की गुणवत्ता में वृद्धि करता है एवं लम्बी अवधि तक इस विधि का उपयोग कर मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाने के साथ–साथ पर्यावरण को हो रही हानि को भी कम कर सकते है।

कार्यक्रम के समन्वयक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी.के. सिंह ने कार्यक्रम तथा परियोजना में चलाये जा रहे विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया एवं गेंहू के साथ–साथ अन्य फसलों में भी संरक्षित कृषि आधारित प्रदर्शन एवं उससे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान जिला–होशंगाबाद से आयी हुई कृषक महिलाओं को कृषि क्षेत्र से जुड़े व्यवसाय जैसे समूह द्वारा खेती, दाल मिल, पापड़ उद्योग, स्वसहायता समूह, इसी प्रकार और भी अन्य कृषि उद्योगों से अवगत कराया गया। डॉ. सिंह ने इस अवसर पर किसानों का आह्वाहन किया कि निदेशालय में चल रही विभिन्न अनुसंधान संबंधित गतिविधियों का जायज़ा ले एवं अपनी भूमि तथा वातावरण के अनुकूल जो तकनीक उपयुक्त हो उसका चयन कर अपनायें एवं अधिक से अधिक लाभ अर्जित करें। निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. के. के. बर्मन ने मृदा स्वास्थ्य का फसल उत्पादन में महत्व बताया एवं किन–किन विधियों से मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखा जाये के बारे में बताया तथा मृदा परीक्षण के लाभ एवं मृदा नमूना लेने की विधियों के बारे में विस्तृत जानकारी से अवगत कराया।

डॉ. वी.के. चौधरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा कृषक भाईयों एवं महिलाओं को निदेशालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रम, प्रदर्शन तथा बीज उत्पादन तकनीकी के बारे में जानकारी प्रदान की गयी। फसलों में खरपतवार प्रबंधन के साथ–साथ कीट व्याधियों से हो रहे नुकसान को कम करने की विभिन्न तरीकों के बारे में जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के दौरान इंजी. चेतन सी.आर., वैज्ञानिक ने किसानों को कम लागत वाले कृषि उपकरण एवं यंत्रों के बारे में विस्तार से बताया, विशेष रूप से खरपतवारनाशी के उपयोग हेतु किस प्रकार के नोजल तथा प्रति एकड़ पानी की मात्रा के साथ निदेशालय के विभिन्न कृषि यंत्रों के बारे में बताया। कार्यक्रम में किसानों ने फसल एवं सब्जी उत्पादन में आ रही विभिन्न समस्याओं के बारे में बताया जिसका निदेशालय के वैज्ञानिकों के द्वारा समाधान बताया गया। इस दौरान श्री एस.के. पारे, श्री धर्मेंद्र बघेले एवं जैनपाल राठौर के द्वारा कृषकों को निदेशालय एवं कृषि यांत्रिक कार्यशाला का भी भ्रमण कराकर जानकारी प्रदान की गई।

विश्व जल दिवस
World Water Day - 2021
दिनांक - 22-03-2021
आयोजक
भाकृअनुप - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय,
जबलपुर (म.प्र.)

विश्व जल दिवस का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय में 22 मार्च, 2021 को कृषकों को जल की उपयोगिता एवं संरक्षण की महत्ता से अवगत कराने हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में पनागर क्षेत्र के बरखेड़ी, इमलई, उमरिया, कारीवाह सहित कई गावों के लगभग 50 कृषकों एवं महिलाओं ने भाग लिया।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने पानी के महत्व पर विस्तृत से चर्चा की एवं विभिन्न आधुनिक तकनीकों के माध्यम से जल संरक्षण पर जोर दिया तथा कृषक भाईयों से अपील करते हुए कहा कि गांवों के आसपास के जलाशयों एवं अन्य जल स्त्रोतों को किस तरह से स्वच्छ बनाये रखा जाये विषय पर जानकारी दी तथा सभी से सहयोग की अपेक्षा की। इस अवसर पर डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने जल की महत्ता को बताते हुए विश्व जल दिवस मनाने का उद्देश्य बताया एवं भविष्य के लिए जल बचाने पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न उदाहरणों द्वारा जल की कमी की भयावहता से सभी को परिचित कराया।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुशील कुमार ने जलीय खरपतवारों के प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया कि इसके प्रबंधन के माध्यम से कैसे जल को पीने योग्य बनाया जाए तथा संरक्षित खेती, मल्चिंग आदि तकनीकों के माध्यम से जल को बचाने पर जोर दिया। पनागर क्षेत्र से प्रगतिशील किसान श्री शंकर लाल पटेल ने जल संरक्षण पर अपने विचार व्यक्त किए।

कैसे निज सोऐ भाग को कोई सकता है जगा,
जो निज भाषा-अनुराग का अंकुर नहिं उर में उगा।

हरिऔध

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।

मैथिलीशरण गुप्त

बायोटेक किसान हब परियोजना
डी.बी.टी., भारत सरकार वित्त पोषित के अंतर्गत
कृषक प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र भ्रमण
आयोजक

किसान बायोटेक परियोजना के तहत् कृषकों के लिए प्रशिक्षण सह-भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

एक दिवसीय प्रशिक्षण–सह–भ्रमण कार्यक्रम सीहोर जिले के इछावर ब्लॉक के निपनिया, सिक्का, बिचोली, कुंदिकल, खैरी, मंडली, सेवनिया गांवों के 45 किसानों के समूह के लिए 23 मार्च, 2021 को आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, कृषकों को खरपतवारों से होने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नुकसान, खरपतवारों के प्रभावी प्रबंधन के लिए अलग–अलग तरीकों, महत्वपूर्ण फसलों के लिए रासायनिक खरपतवार प्रबंधन तकनीकों, एक समान उपयोग और बहाव के नुकसान को रोकने हेतु शाकनाशी छिड़काव तकनीक, विभिन्न प्रकार के शाकनाशी, स्प्रेयर और यांत्रिक निराई उपकरण, शाकनाशी का छिड़काव करते समय सुरक्षा पहलुओं, आदि से अवगत कराया गया। खरपतवार प्रबंधन पर जानकारी के अलावा, कृषकों के ज्ञान को और अधिक समृद्ध करने हेतु रोग और कीट प्रबंधन, अधिक दक्षता के लिए खाद और उर्वरक आवेदन विधियों, फसल अवशेष जलाने के हानिकारक प्रभावों, फसल अवशेष प्रबंधन के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य में सुधार, संरक्षित कृषि, मृदा परीक्षण आदि के लिए खेतों से नमूना एकत्र करने की तकनीक के बारे में बताया गया। किसानों को अतिरिक्त कृषि आय अर्जित करने के लिए सब्जियों और बागवानी फसलों, दुग्ध उत्पादन, मछली पालन, बीज उत्पादन आदि जैसी अन्य गतिविधियों को एकीकृत करने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया।

जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिन्दी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है।

पुरुषोत्तमदास टंडन

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

डॉ. सपूर्णानंद

कुशल सहायी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन

'कुशल सहायी कर्मचारियों के लिए उचित कार्यालय आचरण–सह–सामान्य जागरूकता में कौशल उन्नयन' पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 24–26 मार्च, 2021 के दौरान किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में निदेशालय के सभी कुशल सहायी कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षणार्थियों के बैठने की व्यवस्था कोविड–19 प्रोटोकॉल के अनुसार की गई थी। डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया और प्रशिक्षणार्थियों को कार्यालय एवं कार्यस्थल पर अनुशासन की आवश्यकता पर संबोधित किया। डॉ. योगिता घरडे, वैज्ञानिक ने 'प्रभावी संचार कौशल/विनम्र कौशल' विषय पर व्याख्यान दिया। श्री सुजीत कुमार वर्मा, प्रशासनिक अधिकारी ने 'बुनियादी सूचना प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटर कौशल' विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. तृप्ति सोमानी, फिजियोथेरेपिस्ट, स्टेफिट फिजियोथेरेपी केंद्र, पुणे ने 'शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन' विषय पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया। डॉ. आरती राउत, निजी चिकित्सक, फिजियोथेरेपी, पुणे द्वारा 'सार्वजनिक बोलने की कला' विषय पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया गया। डॉ. पवार दीपक विश्वनाथ, वैज्ञानिक ने अनुशासन के परिणामों और कार्यस्थल में अनुशासन का पालन करने के लाभों पर प्रकाश डालते हुए 'अनुशासन की शक्ति' विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. हिमांशु महावर, वैज्ञानिक ने 'टीम निर्माण अभ्यास' विषय पर चर्चा की। डॉ. वी के चौधरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 'स्वस्थ जीवन के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता' पर व्याख्यान दिया। डॉ. शोभा सोंधिया, प्रधान वैज्ञानिक ने 'अंतर–कार्मिक कौशल विकास' विषय पर व्याख्यान दिया।

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से हिन्दी
विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।
मौलाना हसरत मोहानी

स्थापना दिवस
Foundation Day
22 April, 2021

स्थापना दिवस
Foundation Day
22 April, 2021
Mobile App : DWR-HerbCal
KNOW YOUR HERBICIDES

33वें स्थापना दिवस का आयोजन

निदेशालय ने 22 अप्रैल, 2021 को अपना 33वां स्थापना दिवस मनाया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ एस.के. चौधरी, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन), भा.कृ.अनु.प. ने राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान अनुसंधान केंद्र के शुरुआती दिनों से वर्तमान के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय तक की यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए निदेशालय द्वारा की गई अनुसंधानिक पहल की सराहना की। स्थापना दिवस पर मुख्य व्याख्यान में डॉ. आर.के. मलिक, प्रसिद्ध खरपतवार वैज्ञानिक ने देश में खरपतवार विज्ञान अनुसंधान की ऐतिहासिक प्रगति पर प्रकाश डाला।

डॉ. एस. भास्कर, सहायक महानिदेशक (स.कृ.वा. एवं ज.प.), भा.कृ.अनु.परि. और डॉ. ए.के. गोगोई, पूर्व सहायक महानिदेशक (सस्यविज्ञान), भा.कृ.अनु.परि. ने निदेशालय द्वारा किसानों की आय में सुधार के लिए आर्थिक खरपतवार प्रबंधन तकनीकियों के विकास के माध्यम से किये गए सराहनीय कार्यों और प्रयासों की सराहना की। पूर्व निदेशक डॉ. एन.टी. यदुराजू, डॉ. जय.जी. वार्ष्णेय एवं डॉ. ए.आर. शर्मा ने निदेशालय को अपनी वर्तमान स्थिति में लाने के लिए ख.अनु.नि. के सभी कर्मचारियों की कड़ी मेहनत की सराहना की। इससे पूर्व अपने स्वागत उद्बोधन में डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक ने कहा कि निदेशालय विभिन्न शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, उद्योगों और प्रगतिशील कृषकों के साथ मिलकर काम कर रहा है। इस अवसर पर निदेशालय के विभिन्न प्रकाशनों का विमोचन किया गया। निदेशालय द्वारा चयनित वर्ष 2020–21 के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किये गए। साथ ही भा.कृ.अनु.प. में 25 वर्षों से अधिक सेवायें देने वाले वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एवं सहायक श्रेणियों के स्टाफ सदस्यों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। कोविड–19 महामारी को देखते हुए कार्यक्रम को वर्चुअल मोड में ऑनलाइन आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न भा.कृ.अनु.प. संस्थानों के निदेशक, निदेशालय के माननीय आर.ए.सी. सदस्य, अ.भा.स.अनु.परि.–खरपतवार प्रबंधन के सदस्य तथा प्रगतिशील किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न कार्यक्रमों को सफल बनाने में सहयोग करने वाले प्रगतिशील किसानों को निदेशालय द्वारा इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है. उसे हम सबको अपनाना है।
लालबहादुर शास्त्री

World Environment DAY
05 June, 2021
विश्व पर्यावरण दिवस
आयोजक

World Environment DAY
05 June, 2021
विश्व पर्यावरण दिवस
आयोजक
भा.कृ.अनु.प.- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)

विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

निदेशालय द्वारा 5 जून 2021 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एक ऑनलाईन वेबीनार का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. पी.जे. खनखने, सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक ने विश्व पर्यावरण दिवस पर इस वर्ष की थीम पारिस्थितिकी तंत्र बहाली के तहत् जल प्रदूषण एवं फाइटोरेमिडिएशन के माध्यम से इसके परिशोधन पर अपना उद्‌बोधन दिया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में भारत में नहरों, तालाबों और नदी के पानी की लगातार खराब होती गुणवत्ता पर विस्तार से चर्चा की एवं यह बताया कि दूषित पानी के इस्तेमाल से करीब 15 लाख लोग डायरिया की बीमारी से मर जाते हैं एवं शीशा, क्रोमियम और कैडमियम की भारी सांद्रता से भी मनुष्य में कई बीमारियॉं पैदा हो रही हैं।

डॉ. खनखने ने आगे कहा कि मध्यप्रदेश के भू–जल में आर्सेनिक की मात्रा अधिक होने के कारण स्वास्थ्य का जोखिम भी है, अपने स्वयं के शोध निष्कर्षों के आधार पर औद्योगिक एवं सीवेज जल के परिशोधन के लिए वेटीवेरिया, अरुंडो डोनेक्स और टाइफा आदि खरपतवारीय पौधों की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने रिन्युवल, रिपीट एवं रीपूज अर्थात ट्रिपल आर (संसाधनो का नवीनीकरण, पुनरावृत्ति, पुनः उपयोग) के तहत् अक्षय संसाधनों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। जिसके अंतर्गत संसाधनों के उपयोग को कम करना, पुनः उपयोग, संसाधनो का नवीनीकरण करना आदि है। उन्होंने पर्यावरण संतुलन बनाए रखने हेतु वृक्षारोपण करने को पुण्य कार्य और परम्परा ही नहीं वरन् भविष्य की जरुरत बताया। ऑक्सीजन, पानी और अन्य संसाधनों के महत्व को पहचानने की आवश्यकता पर भी जोर देते हुए कहा गया कि हम सब ने कोरोना महामारी के दौरान इसका अनुभव किया है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अंतर्गत आयोजित वेबीनार में निदेशालय के डॉ. पी.के. सिंह प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. शोभा सोंधिया, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एवं अन्य स्टाफ सदस्यों एवं देश भर के अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना–खरपतवार प्रबंधन के वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों और एन.जी.ओ. ने भाग लिया।

हिंदी द्वारा ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानंद सरस्वती

भारत अमृत महोत्सव
मृदा स्वास्थ्य का उचित
प्रबंधन एवं उर्वरको का संतुलित उपयोग
डॉ शेखर सिंह बघेल
वरिष्ठ वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान)
संचालनालय विस्तार सेवाएं,
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
Dr. KK Barman
Dr. Himanshu...
Mukesh Kumar...
Sumit Gupta
DWR-abhay
Dwr Sumit
Redmi
Nandlal rathore
Preeti Thakur
Mohan Lal Dubey
Khushbu Patel
Sangeeta Upad...

Latitude: 23.914327
Longitude: 79.814837
Elevation: 415.62 m
Accuracy: 6.3 m

किसानों हेतु वर्चुअल जागरूकता गोष्ठी का आयोजन

'मृदा स्वास्थ्य का उचित प्रबंधन एवं उर्वरकों का संतुलित उपयोग' विषय पर 18 जून, 2021 को वर्चुअल मोड में किसान जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया गया। अपने स्वागत भाषण में डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक ने भारतीय मृदा की वर्तमान स्वास्थ्य स्थितियों के बारे में बताया और किसानों से कृषि उत्पादकता को बनाए रखने के लिए मृदा स्वास्थ्य सुधार प्रबंधन उपायों पर तत्काल ध्यान देने का आग्रह किया। डॉ. शेखर सिंह बघेल, वरिष्ठ वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर ने किसानों को संतुलित उर्वरक के लिए मृदा परीक्षण के महत्व, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, जैविक उर्वरक की आवश्यकता एवं फसल अवशेष पुनर्चक्रण आदि के बारे में जानकारी प्रदान कर शिक्षित किया। उन्होंने फसल अवशेषों और पर्यावरण को जलाने से मृदा पर होने वाले नकारात्मक प्रभावों के बारे में भी बताया। डॉ. के.के. बर्मन, प्रधान वैज्ञानिक और कार्यक्रम सह–समन्वयक ने 4 आर दृष्टिकोण की व्याख्या की और किसानों से उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए इसका पालन करने के लिए अनुरोध किया। श्री दिबाकर रॉय, वैज्ञानिक ने बाजार में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के नत्रजन उर्वरकों के बारे में बताया। डॉ. हिमांशु महावर, वैज्ञानिक ने मृदा स्वास्थ्य के दीर्घकालिक प्रबंधन के लिए जैव उर्वरकों के महत्व के बारे में बताया। मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों जैसे जबलपुर, दमोह, सीहोर, होशंगाबाद, राजगढ़ और बालाघाट के लगभग 160 किसानों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

> हिन्दी का आंदोलन समूचे देश को आत्म निर्भर और समृद्ध बनाने का संकल्प है।
>
> डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

> देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।
>
> नेताजी सुभाष चंद्र बोस

Inter
al Day of
June, 2021
आयोजक
निदेशालय, जबलपुर

विश्व योग दिवस का आयोजन

निदेशालय के परिसर में दिनांक 21 जून 2021 को 7 वॉं विश्व योग दिवस का आयोजन ''योग के साथ रहें – घर पर रहें'' "Be With Yoga & Be At Home" थीम पर बडे उत्साह पूर्वक भारत सरकार द्वारा जारी कोविड–19 के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए दो सत्रों में किया गया। प्रथम सत्र में निदेशालय के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों द्वारा प्रातः 6.30 से 8.00 बजे तक विख्यात योग प्रशिक्षक श्री पद्‌माकर तलवारे, सत्यानंद योग केंद्र, जबलपुर के मार्गदर्शन में योग अभ्यास किया गया तथा द्वितीय सत्र में स्वस्थ जीवन के लिए योग का महत्व विषय पर व्याख्यान डॉ. आर.के. नेमा, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी संकाय, ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर द्वारा दिया गया।

इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र द्वारा वर्तमान महामारी के समय में रोजमर्रा के व्यस्ततम जीवन शैली और स्वस्थ रहने के तरीको में योग की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी लोगो से अपने दैनिक दिनचर्या में योग को अपनाने की अपील की गई, ताकि व्यक्ति तनाव रहित होकर स्वस्थ तन मन के साथ अपने दायित्वो को तत्परता के साथ सम्पादित कर सके। डॉ. मिश्र ने कहा कि विश्व पर्यावरण को जीवन के अनुकूल बनाये रखने हेतु योग में उपयोग की जाने वाली सामग्री पर्यावरण हितैषी होना चाहिए। पर्यावरण के अनुकूल सामग्री के साथ किये जाने वाले योग अभ्यास अधिक सुरक्षित व उपयोगी होगें। विख्यात योगाचार्य श्री पद्‌माकर तलवारे द्वारा योग के विभिन्न आसन, प्राणायाम तथा शुद्धि क्रियाओ का अभ्यास निदेशालय के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों को करवाया गया, श्री तलवारे ने कहा कि योग आदिकाल से हमारे जीवन का हिस्सा रहा है। स्वस्थ तन एवं मन रखने हेतु प्रति दिन योग करना आवश्यक है।

द्वितीय सत्र में डॉ. आर.के. नेमा ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए संयमित जीवन शैली का होना आवश्यक है और इसके लिए नियमित योग करना जरुरी है। योग की विभिन्न क्रियायें शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढाती हैं तथा अनियमित दिनचर्या से होने वाले संभावित रोगों से मुक्त रखने में सहायक होती हैं। डॉ. नेमा ने कहा कि यदि व्यक्ति तन एवं मन से योग करके स्वस्थ रहेगा तो उसकी कार्य क्षमता भी बढ जायेगी। योग प्रशिक्षण में निदेशालय के 80 से ज्यादा अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

भारतीयता का दूसरा नाम हिन्दी है।

भगवती चरण वर्मा

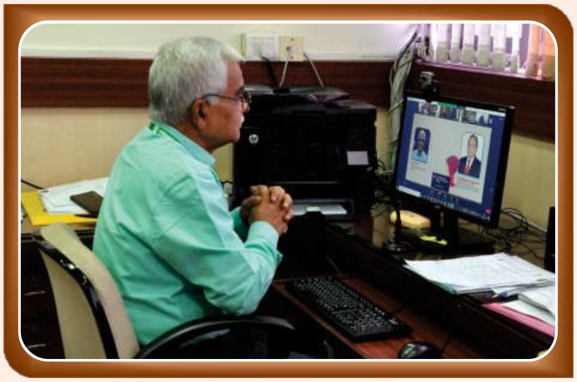

HP
Dr S P SINGH, P...
Arvind Verma
Sandeep Dhagat
Dr. Tej Pratap
Dr Neelam Shar...
Dr. Khagen Kur...
M M MISHRA

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना - खरपतवार प्रबंधन की वार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन

अ.भा.स.अनु.परि.–खरपतवार प्रबंधन की 28वीं वार्षिक समीक्षा बैठक (ए.आर.एम.) का आयोजन 18–19 जून, 2021 के दौरान किया गया। डॉ. एस.के. चौधरी, उपमहानिदेशक (प्रा.सं.प्र.), भा.कृ.अनु.प. ने उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और डॉ. एस. भास्कर, सहायक महानिदेशक (सस्य विज्ञान, कृ.वा. एवं ज.प.), भा.कृ.अनु.प. विशिष्ट अतिथि रहे। डॉ. समुंदर सिंह, पूर्व प्राध्यापक एवं प्रमुख – सस्य विज्ञान, चौ.च.सि.ह.कृ.वि., हरियाणा और अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान सोसाइटी; डॉ, आरएम काथिरेसन, प्राध्यापक, सस्यविज्ञान विभाग, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु को विशेषज्ञों के रूप में आमंत्रित किया गया। डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक ने अपने उद्घाटन भाषण में भा.कृ.अनु.प. मुख्यालय, भा.कृ.अनु.प.–सहायक संस्थानों, विश्वविद्यालयों और निजी एजेंसियों, विभिन्न अ.भा.स.अनु.परि. केंद्रों और इस निदेशालय के प्रमुख अन्वेषणकर्ता, वैज्ञानिकों तथा सभी गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिष्ठित और प्रख्यात वैज्ञानिकों का स्वागत किया। उन्होंने अ.भा.स.अनु.परि.–ख.प्र. केंद्रों द्वारा प्राप्त प्रमुख शोध निष्कर्षों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। डॉ. भास्कर ने सीधी बुवाई धान में खरपतवार नियंत्रण और आक्रामक, परजीवी और जलीय खरपतवारों के मानचित्रण पर अनुसंधान को तेज करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. ए.के. सिंह, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली ने बासमती मूल के साथ धान की दो इमाजेथापायर–सहिष्णु किस्मों के विकास के संबंध में निदेशालय से प्राप्त सहयोग की सराहना की। डॉ. एस.के. चौधरी ने अपनी टिप्पणी में खरपतवार पर समेकित शोध कार्य की आवश्यकता, फसल–खरपतवार अंतःक्रिया का जीव विज्ञान और फिजियोलॉजी, विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकी तंत्रों में विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन व्यवस्था के तहत उच्च इनपुट कृषि में खरपतवार वनस्पतियों में बदलाव, खरपतवारों में शाकनाशी प्रतिरोध, शाकनाशी अवशेष खतरा और पर्यावरणीय प्रभाव, खरपतवार जोखिम मूल्यांकन, जैविक कृषि में खरपतवार प्रबंधन, आदि पर बल दिया एवं स्थायी खरपतवार प्रबंधन के लिए नीतिगत मुद्दों पर भी चर्चा की गई। अ.भा.स.अनु.परि.–ख.प्र. के आनंद कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात केंद्र को वर्ष 2020 के सर्वश्रेष्ठ केंद्र का पुरस्कार मिला था। चार तकनीकी सत्रों में 17 नियमित और 07 स्वैच्छिक केंद्रों के प्रमुख अन्वेषणकर्ताओं ने अपनी प्रगति और अनुसंधान उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। डॉ. समुंदर सिंह ने खरपतवार सर्वेक्षण और नए उभरते खरपतवारों की पहचान पर अधिक कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. आर.एम. कथिरेसन ने राष्ट्रीय महत्व के खरपतवारों पर विशेष रूप से जलीय, फसलीय और गैर–फसलीय क्षेत्रों पर अधिक शोध करने का सुझाव दिया। डॉ. एस. भास्कर, ने मुख्य अतिथि के रूप में पूर्ण सत्र की शोभा बढ़ाई और वर्चुअल मोड में वार्षिक समीक्षा बैठक को अच्छी तरह से संचालित करने के लिए ख.अनु.नि. को बधाई दी। इस सत्र के दौरान डॉ. बी.डी. पटेल, डॉ. नीलम शर्मा, एवं श्री ओ.एन. तिवारी को अगले समीक्षा बैठक से पहले उनकी सेवानिवृत्ति को ध्यान में रखते हुए सम्मानित किया गया।

93वॉं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् स्थापना दिवस एवं वृहद् वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा दिनांक 16 जुलाई, 2021 को 93वॉं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र रहे तथा कार्यक्रम में निदेशालय के समस्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने निदेशालय में चल रही गतिविधियों एवं अनुसंधान कार्यो से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में प्रयास किये जा रहे हैं, जिसमें शोध के साथ ही विस्तार कार्यक्रम पर भी जोर दिया जा रहा है।

डॉ. मिश्र ने इस अवसर पर कहा कि कृषि को कृषकों का स्वर्णिम काल बनाने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अग्रणीय भूमिका निभा रही है, किसानों की वर्तमान समस्याओं की चर्चा करते हुये वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे तकनीकी विकास के साथ ही तकनीकी विस्तार पर भी कार्य करें एवं उन्होंने किसानों को कोऑपरेटिव सोसायटी बनाकर कार्य करने के लिये प्रेरित किया।

इसके पश्चात् संस्थान में देश की स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ पर भारत की आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में ''हर मेड़ पर पेड़'' थीम पर वृहद् वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न प्रजाति के लगभग 250 वृक्षों को निदेशालय परिसर में निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र एवं समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा रोपित किये गये।

> जिस हिन्दी भाषा के खेत में भावों की सुनहरी फसल लहलहा रही है,
> उसकी स्वाभाविक उर्वरता अक्षुण्ण रहेगी।
>
> रवीन्द्र नाथ टैगोर

पत्रकार वार्ता
आयोजक
भाकृअनुप- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय
जबलपुर (म.प्र.)
16th PARTHENIUM
AWARENESS WEEK
पुरस्कार
16th गाजरघास

पत्रकार वार्ता

पत्रकार वार्ता

16वाँ गाजरघास जागरूकता सप्ताह पर पत्रकार वार्ता का आयोजन

गाजरघास न केवल फसलों बल्कि मनुष्य के लिए भी एक गंभीर समस्या है, गाजर घास नियंत्रण हेतु खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर प्रति वर्षानुसार 16 अगस्त से 22 अगस्त, 2021 तक गाजरघास जागरूकता सप्ताह राष्ट्रीय स्तर पर अपने 24 केंद्रों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के समस्त संस्थानो, विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, स्कूल, कॉलेजो तथा समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 16 अगस्त को वेबिनार ''गाजरघास खरपतवार की समस्या और विश्व स्तर पर इसका प्रबंधन'' विषय पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम को मुख्य वक्ता डॉ. स्टीव डब्लू एडकींस ऑस्ट्रेलिया तथा मुख्य अतिथि डॉ. एस.के. चौधरी उप महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली, विशेष अतिथि डॉ. एस. भास्कर सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली ने संबोधित किया। कार्यक्रम के आयोजन में डॉ. ए.के. पांडे, कुलपति, विक्रम वि.वि. उज्जैन, डॉ. जे. एस. मिश्र, निदेशक, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर एवं डॉ. सुशील कुमार, अध्यक्ष, इंडियन सोसायटी ऑफ वीड साइंस की सहभागिता रही। कार्यक्रम का आयोजन खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने बताया कि गाजरघास (पार्थेनियम) न केवल फसलों, बल्कि मनुष्यों और पशुओं के लिए भी एक गंभीर समस्या है। गाजरघास पूरे वर्ष भर उगाता एवं फलता फूलता रहता है, बहुतायत रूप से गाजरघास के पौधे खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों, औद्योगिक क्षेत्रों, सड़क के किनारों, रेलवे लाइनों आदि पर पाए जाते हैं। इनके अलावा इसका प्रकोप धान, ज्वार, मक्का, सोयाबीन, मटर, तिल, अरंडी, गन्ना, बाजरा, मूंगफली सब्जियों एवं उद्यान फसलों में भी देखा गया है। गाजरघास के तेजी से फैलने के कारण अन्य उपयोगी वनस्पतियों, स्थानीय जैव विविधता एवं पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। डॉ. मिश्र ने बताया कि इस खरपतवार के लगातार संपर्क में आने से मनुष्यों में डर्मेटाइटिस, एग्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा आदि जैसी बीमारियां हो जाती हैं। इसके खाने से पशुओं में अनेक प्रकार के रोग पैदा हो जाते हैं एवं दुधारू पशुओं के दूध में कड़वाहट आने लगती है। गाजरघास के उन्मूलन हेतु हाथ से उखाड़ने तथा अन्य यांत्रिक विधियों में काफी व्यय करना पड़ता है तथा साथ ही साथ खरपतवार के पुनरावृति की संभावना भी रहती है, हाथ से छूने पर मनुष्यों में दमा, खुजली आदि बीमारियों से ग्रस्त होने की संभावना और बढ़ जाती है।

डॉ. मिश्र ने बताया कि जैविक नियंत्रण विधि से खरपतवारों का नियंत्रण, उनके प्राकृतिक शत्रु, मुख्यतः कीटों, रोग के जीवाणु एवं वनस्पतियों द्वारा किया जाता है। जैविक विधि द्वारा इस खरपतवार के नियंत्रण का प्रयास हमारे निदेशालय द्वारा युद्धस्तर पर किया जा रहा है। गाजरघास के विरुद्ध मेक्सिको से एक भृंग जाति के कीट ''जाइगोग्रामा, बाइक्लोराटा'' को आयात किया गया है, जो कि अब भारतीय परिस्थितियों में अच्छी तरह से स्थपित हो गया। यह कीट गाजरघास की पत्तियों को पूरी तरह से खाकर पौधों को पत्ती रहित कर देता है तथा अंत में पौधे सूख जाते हैं। इस कीट ने देश के कई प्रदेशों तथा क्षेत्रों में गाजरघास के प्रकोप को कम करने में अपार सफलता और ख्याति प्राप्त की है। हमारा निदेशालय इस कीट के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। निदेशालय द्वारा अब तक लगभग 20 लाख मैक्सिकन बीटल देश के विभिन्न प्रदेशों में निःशुल्क छोड़े जा चुके है। डॉ. मिश्र ने बताया कि गाजरघास जागरूकता सप्ताह का आयोजन निदेशालय एवं अपने 24 केंद्रों, विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों तथा समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से किया जाता है।

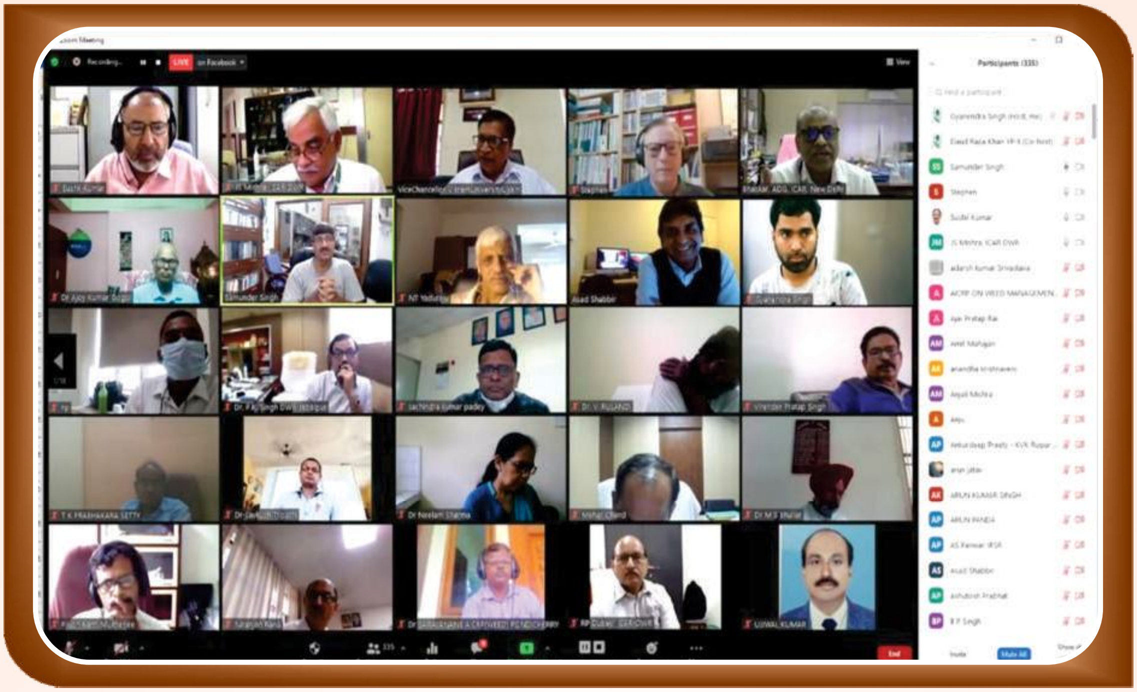

SK Chaudhari, DDG(NRM), ICAR

गाजरघास जागरूकता सप्ताह पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

गाजरघास नियंत्रण हेतु निदेशालय द्वारा 16 अगस्त से 22 अगस्त 2021 तक गाजरघास जागरूकता सप्ताह राष्ट्रीय स्तर पर अपने 24 केंद्रों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के समस्त संस्थानो, विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, स्कूल, कॉलेजो तथा समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 16 अगस्त को अंतरराष्ट्रीय वेबिनार द्वारा "गाजरघास खरपतवार की समस्या और विश्व स्तर पर इसका प्रबंधन" विषय पर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. स्टीव डब्लू एडकींस ऑस्ट्रेलिया तथा मुख्य अतिथि डॉ. एस.के. चौधरी ,उप महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, विशेष अतिथि डॉ. एस. भास्कर सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति डॉ. अखिलेश पांडे जी ने की। इस अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार में विश्वभर के करीब 500 वैज्ञानिकों/छात्रों, विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. स्टीव डब्लू एडकींस, ऑस्ट्रेलिया ने कहा कि गाजारघास के नियंत्रण के लिए जैवकीय नियत्रंण आधारित समन्वित विधियों का प्रयोग करना आवश्यक है। उन्होने कहा कि इस भीषण समस्या से मुक्ति पाने के लिए समाज के हर वर्ग की भागीदारी अवश्यक है। उन्होने गाजरघास से निपटने के लिए दूसरे जैविक कीटों को भारत में लाने का सुझाव दिया।

मुख्य अतिथि डॉ. एस.के. चौधरी ने कहा कि इसके नियंत्रण के लिए मनरेगा जैसी योजनाओं के माध्यम से प्रयास करने होगे। उन्होने उखाडी गयी गाजरघास से कम्पोस्ट बनाने की अनुशंसा की।

विशेष अतिथि डॉ. एस. भास्कर ने कहा कि गाजरघास के नियंत्रण के लिए सभी विधियों का आवश्यतानुसार उपयोग कर ही इस भीषण समस्या से पार पाया जा सकता है। इसलिए इसका नियंत्रण अति आवश्यक है।

निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने बताया कि गाजरघास (पार्थेनियम) न केवल फसलों, बल्कि मनुष्यों और पशुओं के लिए भी एक गंभीर समस्या है। गाजरघास पूरे वर्ष भर उगाता एवं फलता फूलता रहता है। बहुतायत रूप से गाजरघास के पौधे खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों, औद्योगिक क्षेत्रों, सड़क के किनारों, रेलवे लाइनों आदि पर पाए जाते हैं। इनके अलावा इसका प्रकोप धान, ज्वार, मक्का, सोयाबीन, मटर, तिल, अरंडी, गन्ना, बाजरा, मूंगफली सब्जियों एवं उद्यान फसलों में भी देखा गया है। गाजरघास के तेजी से फैलने के कारण अन्य उपयोगी वनस्पतियों, स्थानीय जैव विविधता एवं पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अगर हमें अपने एवं परिवार के स्वास्थ्य की रक्षा करना है तो गाजरघास से छुटकारा पाना जरूरी है । इस अवसर पर गाजरघास को समूल नष्ट कर भारत को गाजरघास मुक्त बनाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का आयोजन भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर एवं इंडियन सोसायटी ऑफ वीड साइंस ने संयुक्त रूप से किया।

अनुसूचित जाति उप योजन के तहत् किसानों को फलदार पौधों का वितरण

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा 21 अगस्त, 2021 को शहपुरा क्षेत्र में 11 गॉवों के अनुसूचित जाति के किसानों को उन्नत किस्म के आम, अमरुद, नींबू, सीताफल और सहजन के फलदार पौधों का वितरण अनुसूचित जाति उप योजना के अन्तर्गत किया गया। कार्यक्रम में इस योजना के अंतर्गत ग्राम किसरौद, करौंदी, कैथरा, मगरमुहा, परछीया, नोनी, गड़रपिपरिया, कटंगी, लामी, टिपरा एवं सहजपुर गांवो के लगभग 100 अनुसूचित जाति के किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम की नोडल अधिकारी डॉ. योगिता घरडे, वैज्ञानिक ने सभी का स्वागत करते हुए उन्हे भारत सरकार की इस योजना का परिचय एवं इसके उद्देश्यों से सभी को अवगत कराया, साथ ही किसानों को उन्नत किस्म के पौधे के वितरण के साथ ही उद्यानिकी को अतिरिक्त लाभ अर्जित करने के साधन के रूप में अपनाने पर जोर दिया।

निदेशालय के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम के बारे में निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने बताया कि शहपुरा क्षेत्र के 11 गावों में अनुसूचित जाति उप योजना 2021 से लागू की गई है। योजना का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति के किसानों की आय बढ़ाना एवं उनके जीवन स्तर को ऊँचा करना है। योजना के हितग्राहियों से इस योजना का पूरा लाभ उठाने के साथ ही उनसे सहयोग करने की अपील की ताकि इस योजना का लाभ सभी लाभार्थीयों तक पहुँच सके।

डॉ. मिश्र ने बताया कि खरपतवारों के प्रबन्धन के साथ–साथ इसके नियंत्रण की समुचित जानकारी एवं इसके नियंत्रण हेतु जागरूकता अनुसूचित जाति के कृषको के खेतो तक पहुँचना आवश्यक है। इस हेतु खरपतवार अनुसंधान निदेशालय की सामूहिक पहल से खरपतवार नियंत्रण के अच्छे परिणाम सामने आयेगें। मृदा स्वास्थ्य हेतु संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग पर जोर दिया, साथ ही खाद्यान्न उत्पादन बढाने हेतु कृषकों को तकनीकी जानकारी के साथ संरक्षित खेती अपनाने से खेतो में होने वाले खरपतवारों तथा फसल अवशेषों से खाद बनाने की विधि के बारे में बताया।

> हिन्दी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषा रूपी फूलों को पिरोकर
> भारत के लिए एक सुन्दर हार का सृजन करेगा।
> डॉ. जाकिर हुसैन

Azadi Ka Amrit Mahotsav
FOOD AND NUTRITION FOR FARMERS
किसानों के लिए खाद्य एवं पोषण
खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में
खरपतवार प्रबंधन का महत्व

कृषक संगोष्ठी-सह-परिचर्चा का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत आयोजित ''किसानों के लिए खाद्य एवं पोषण'' विषय पर कार्यक्रम पूरे देश में आयोजित किये गये, इसी तारतम्य में खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा दिनांक 26 अगस्त 2021 को ''खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में खरपतवार प्रबंधन का महत्व'' विषय पर कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कृषकों को खरतपवार प्रबंधन के उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी विशेषज्ञों के द्वारा प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में जबलपुर के अलग–अलग क्षेत्रों से आये 184 महिला एवं पुरूष कृषकों, कृषि वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने कृषकों का स्वागत करते हुए अपने उद्‌बोधन में खाद्यान एवं पोषण सुरक्षा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये खरपतवारों द्वारा फसल उत्पादन में किये जा रहे नुकसानों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होने बताया कि विगत वर्षों में हमने खाद्यान के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की हैं, लेकिन हमें पोषण के उपर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि फसलों एवं मृदा का पोषण करते हुए हम अच्छी गुणवत्तायुक्त उत्पादन बढ़ा सके, साथ ही साथ उन्होंने तिलहनी एवं दलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने पर जोर दिया और इसके लिए उन्होंने कृषकों को उन्नत खरपतवार प्रबंधन की तकनीकों का उपयोग करने की सलाह दी।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने बताया कि निदेशालय द्वारा विगत 15 वर्षों से विभिन्न जिलों एवं गाँवों में चलाये जा रहे उन्नत खरपतवार प्रबंधन एवं संरक्षित कृषि आधारित कार्यक्रमों से कम लागत से उच्च गुणवत्तायुक्त खाद्यान्न उत्पादन बढ़ रहा है। आज खाद्यान्न में उत्पादन बढ़ाने के साथ पोषक तत्वों से भरपूर खाद्यान्न को उगाना जरूरी है। उन्होंने उचित समय पर खरपतवार प्रबंधन करने पर भी जोर दिया।

डॉ. सुशील कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक, ने किसानों के साथ परिचर्चा में भाग लेकर उनसे कृषि संबंधित तकनीकी समस्याओं का समाधान किया।

> हर देश को किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह
> भारत में केवल हिन्दी ही हो सकती है।
>
> इंदिरा गांधी

पोषण वाटिका महाभियान एवं वृक्षारोपण

पोषण वाटिका महाभियान एवं वृक्षारोपण

पोषण वाटिका महाभियान एवं वृक्षारोपण का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में पूरे देश में अन्तर्राष्ट्रीय पोषण अनाज वर्ष 2023 के परिपेक्ष में पोषण वाटिका महाभियान एवं वृक्षारोपण का आयोजन दिनांक 17/09/2021 को खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा कृषक संगोष्ठी एवं वृक्षारोपण के रुप में किया गया। जिसमें महिला एवं पुरूष कृषकों को विशेषज्ञों द्वारा संतुलित पोषण पर जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में जबलपुर के अलग–अलग क्षेत्रों से आये 184 महिला एवं पुरूष कृषकों, कृषि वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने महिला कृषकों का स्वागत करते हुए अपने उद्बोधन में खाद्यान एवं पोषण अनाज की महत्वता पर प्रकाश डालते हुये, पोषण अनाज जैसे ज्वार–बाजरा–कोदो–संवा–रागी आदि का उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया जिससे कि एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके और हमारे परिवार खासकर महिलाओ व बच्चों को कुपोषण से मुक्ति मिल सके। उन्होने कहा कि बच्चे व महिलाएं परिवार की धुरी हैं और उनके पोषण पर ही समाज का स्वास्थ्य निर्भर करता है। पोषण वाटिका सबको प्राकृतिक पोषण देगी और प्राकृतिक पोषण में पोषक तत्वों का बॉयो एवेलेबिलिटी भी अधिक होती है साथ ही साथ उन्होंने तिलहनी एवं दलहनी फसलों के उत्पादन एवं फलदार वृक्षो का रोपण ज्यादा से ज्यादा करने पर जोर दिया और इसके लिए उन्होंने कृषकों को उन्नत खरपतवार प्रबंधन की तकनीकों का उपयोग करने की सलाह दी।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने बताया कि आज पोषण अनाज का उत्पादन बढ़ाने के साथ पोषक तत्वों से भरपूर खाद्यान्न अपने दैनिक भोजन में भी शामिल करना आवश्यक है। पौधों को मौसम अनुसार लगाकर पोषण वाटिका का विकास किया जाना चाहिए इसके अलावा पोषण के क्षेत्र में नवाचार भी किए जाएं जिनमें सहजन–आंवला–पपीता आदि पोषक तत्वो से भरपूर फलदार वृक्षो को मेडो पर रोपे जाने पर विशेष जोर दिया।

डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक, ने महिला एवं पुरूष कृषकों के साथ परिचर्चा के दौरान उन्हें खाद्यान एवं पोषण अनाज की कृषि संबंधित तकनीकी जानकारी प्रदान की एवं समस्याओं का समाधान किया।

> हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।
>
> राजर्षि पुरूषोत्तम

कृषक - वैज्ञानिक अन्तराफलक बैठक
विषयः जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक
दिनांक - 20 सितम्बर, 2021
आयोजक

कृषक - वैज्ञानिक अन्तराफलक बैठक
विषयः जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक

कृषक-वैज्ञानिक अन्तराफलक बैठक का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.– खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर में दिनांक 28 सितम्बर, 2021 को ''जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक'' विषय पर कृषक–वैज्ञानिक अन्तराफलक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें कृषकों को जलवायु परिवर्तन के कारण सामने आ रही नई चुनौतियों जैसे असमय एवं कम वर्षा, तापमान मे वृद्धि एवं पर्यावरण मे हानिकारक गैसों की बढ़ती मात्रा आदि के कारण कृषि उत्पादन मे होने वाली कमी एवं इन चुनौतियों से निपटने के लिए विकसित उन्नत तकनीकों जैसे कम अवधि वाली जलवायु अनुकूल फसलों की किस्मों, संरक्षित खेती, फसल चक्र में पोषक अनाजों (सांवा, रागी, कोदो, ज्वार, बाजरा) का समावेश एवं खरपतवार प्रबंधन के बारे में जानकारी विशेषज्ञों के द्वारा प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में जबलपुर के अलग–अलग क्षेत्रों से आये 184 कृषकों, कृषि वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया।

डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि में सामने आ रही नई चुनौतियों के प्रबंधन हेतु उन्नत तकनीकों को अपना कर कृषक बंधु अपनी उपज एवं आय को भी बढ़ा सकते है।

डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने कहा कि कृषि के बदलते परिवेश मे कृषको को अपनी आय बढ़ाने हेतु फसल आधारित आय प्रणाली से बाहर निकल कर मूल्यवर्धन और खेती के अन्य विकल्पों को चुनना चाहिये।

इस अवसर पर प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से विशेष लक्षणों वाली 35 फसल किस्मों को राष्ट्र को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय जैविक तनाव प्रबंधन संस्थान रायपुर के नवनिर्मित परिसर को भी राष्ट्र को लोकार्पित किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कृषि विश्वविद्यालयों को ग्रीन कैंपस अवार्ड भी वितरित किये। उन्होने अभिनव तरीकों का उपयोग करने वाले किसानों के साथ बातचीत की और सभा को संबोधित करते हुए कहा कि "जब भी किसानों को उन्नत कृषि संबंधी तकनीकी ज्ञान होता है, तो उनका विकास तेजी से होता है। विज्ञान, सरकार और समाज एक साथ काम करते हैं, तो परिणाम बेहतर होते हैं। किसानों और वैज्ञानिकों का ऐसा गठबंधन देश को नई चुनौतियों से निपटने में मजबूत करेगा।

डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक ने बैठक में आये हुए कृषक बंधुओ को पोषण अनाजो के बारे मे स्लाइड प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्रदान की साथ ही कृषक बंधुओ को शाकनाशी रसायनों के छिड़काव हेतु स्प्रेइंग किट प्रदान किए गए एवं प्रक्षेत्र भम्रण के दौरान निदेशालय में किए जा रहे विभिन्न अनुसंधानों के बारे में विस्तार से बताया गया।

अनुसूचित जाति उप योजना के अंतर्गत
कृषकों के लिए
जागरूकता एवं कृषि सामग्री वितरण कार्यक्रम
स्थान: पौड़ी, अखोनी
दिनांक : 12 अक्टूबर, 2021
आयोजक
ICAR'S SPECIAL NATIONAL SWACHHTA CAMPAIGN ON
WASTE TO WEALTH
ICAR - DIRECTORATE OF WEED RESEARCH

अनुसूचित जाति उप योजना के अंतर्गत
WASTE TO WEAL

विशेष राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का आयोजन

माननीय प्रधानमंत्री जी के आवाहन पर भारत सरकार के समस्त मंत्रालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सस्थानों द्वारा दिनांक 12 अक्टूबर, 2021 को पूरे देश में विशेष राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इसी क्रम में खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा ग्राम पौंडी, अचलोनी पाटन में विशेष राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में कृषकों को कृषि, पशुपालन एवं अन्य स्त्रोतो से उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थों का सही उपयोग, मवेशियों के गोबर से गोबर गैस बनाने तथा फसलों एवं खरपतवारों के अवशेषों का उपयोग केंचुआ खाद बनाने हेतु किये जाने की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के लगभग 200 महिला व पुरुष कृषकों ने भाग लिया इस अवसर पर निदेशालय के कृषि वैज्ञानिक व तकनीकी अधिकारी भी उपस्थिति रहे।

डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने अपने उद्बोधन में निदेशालय द्वारा अपशिष्ट एवं खरपतवारों व फसलों के अवशेषों के समुचित उपयोग पर किये जा रहे शोध तथा प्रचार–प्रसार के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि आधुनिक विज्ञान के युग में खेतों में पैदावार बढ़ाने के लिए विभिन्न रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया जा रहा है ये रासायनिक उर्वरक खेतो की उपजाऊ क्षमता को नष्ट कर रहे हैं साथ ही इनका प्रतिकूल प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर भी पड रहा है। इसके निवारण हेतु कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर जैविक खादों का उपयोग करना अत्यंत आवश्यक हैं। कृषि द्वारा उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थों एवं मवेशियों के गोबर को एकत्रित करके उनका वर्मी कम्पोस्ट विधि द्वारा जैविक खाद बनाया जाता हैं। इन जैविक उर्वरकों का उपयोग खेतों मे किये जाने से खेतों की उर्वरा क्षमता तो बढती ही है साथ ही उन्हें बंजर होने से भी बचाया जाता हैं। डॉ. मिश्र ने खाघान्न उत्पादन बढ़ाने हेतु कृषकों को तकनीकी जानकारी के साथ संरक्षित खेती को अपनाने व खेतो में होने वाले खरपतवारों तथा फसल अवशेषो से खाद बनाने की विधि के बारे में बताया तथा इनके उपयोग से मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये कृषकों से अपील भी की।

डॉ. के.के. बर्मन प्रधान वैज्ञानिक ने अपने उद्बोधन में निदेशालय द्वारा चलाये जा रहे विभिन्य लाभकारी कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी साझा करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू कचरे से उचित विधि अपनाकर उसे वर्मी–खाद में परिवर्तित किया जा सकता है, जिससे किसान कम कीमत में जैविक खाद प्राप्त कर सकते हैं।

> हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।
>
> माखनलाल चतुर्बेदी

मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत
वैज्ञानिक - कृषक परिचर्चा
स्थानः ग्राम रीवा, बरगी, जबलपुर
दिनांक : 19 अक्टूबर, 2021
भा.कृ.अनु.प. - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय
जबलपुर (म.प्र.)
चायत चौरई
अभिनंदन करती है

वैज्ञानिक-कृषक परिचर्चा का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा दिनांक 19 अक्टूबर, 2021 को वैज्ञानिक – कृषक परिचर्चा का आयोजन ग्राम चौरई, बरगी क्षेत्र में किया गया साथ ही कृषकों के खेतों में निदेशालय द्वारा किये जा रहे अनुसंधान प्रदर्शनों का भ्रमण किया गया। कार्यक्रम डॉ. सूर्यनारायण भास्कर, सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर किसानों को कृषि से सबंधित जानकारी प्रदान कर उन्हें जागरूक किया गया, जिससे कि वे कम खर्च में ज्यादा उत्पादन प्राप्त कर अपनी आय को बढा सकें। कार्यक्रम में लगभग 50 कृषकों ने भाग लिया जिसमें बरगी क्षेत्र के किसानों के अलावा डॉ. व्ही.पी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ, डॉ. यू.पी. सिंह, वरिष्ठ प्राध्यापक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय एवं निदेशालय के कृषि वैज्ञानिकों व तकनीकी अधिकारी भी उपस्थित रहे।

डॉ. सूर्यनारायण भास्कर, सहायक महानिदेशक ने किसानो का स्वागत करते हुये अपने उद्बोधन में किसानों को खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा विकसित की गई तथा सुझाई गई खरपतवार प्रबंधन तकनीकों को अपनाने का आवाहन किया। उन्होंने 2023 को विश्वव्यापी अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष के रूप में मनाने तथा उसमें परिषद की भूमिका के बारे में बताया। किसानों को मिलेट के साथ–साथ अन्य फसलों के बीज भंडार तैयार करने तथा बीजों की किस्म को संरक्षित करने तथा उच्च गुणवत्ता वाले बीजों को आपस में बांट कर खेती करने की सलाह दी साथ ही साथ निदेशालय द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की सराहना की।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा की खरपतवारों के द्वारा कृषको को उत्पादन में लगभग 37% तक का नुकसान होता है। अतः हमें खरपतवार प्रबंधन के विभिन्न आयामों को संसाधनों की उपलब्धता के अनुरूप उपयोग कर उसमें होने वाले नुकसान को कम कर एवं खेती की लागत में कमी लाकर उपज में वृद्धि कर भारत सरकार की अपेक्षा अनुरूप 2024 तक अपने लाभ को दुगना करना है। अतः हमें हमारे पोषण को ध्यान में रखते हुए संतुलित आहार अपनाने की आवश्यकता है।

मेरा गांव मेरा गौरव कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पी.के. सिंह ने कहा कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में निदेशालय द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों से किसान भाई जुड़कर लाभान्वित हो रहे हैं।

हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें हमारे देश की समस्त भाषाओं का समन्वय है।

राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह
Vigilance Awareness Week
स्वतंत्र भारत @ 75 : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता
"Independent India @ 75 : Self Reliance with Integrity"
26 अक्टूबर से 01 नवम्बर, 2021
आयोजक
भाकृअनुप- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)

Awareness Week

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

निदेशालय में दिनांक 26 अक्टूबर से 01 नवंबर, 2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा लेने के साथ ही विभिन्न प्रतियोगितायें एवं प्रक्षेत्र पर व्याख्यान आयोजित किये गए । समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सत्येन्द्र ज्योतिषी, वरिष्ठ अधिवक्ता, मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने अपने विचार रखते हुये कहा कि सरकारी कामकाज को समय से तथा पारदर्शी तरीके से किया जाना चाहिए। इस स्वस्थ परम्परा का निर्वहन करने से राष्ट्र की प्रगति में बडा योगदान होगा। इस अवसर पर उन्होने अधिकारियों कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपने काम ईमानदारी से प्रतिपादित करें तथा ईमानदरी को जीवन शैली के रुप में अपनाया जावे। श्री ज्योतिषी ने हर्ष व्यक्त किया कि निदेशालय में भ्रष्टाचार के मामले नगण्य हैं एवं यहॉ चल रहे अनुसंधान कार्य सराहनीय हैं।

डॉ. जे.एस. मिश्र निदेशक, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने कहा कि सरकारी कामकाज विलम्ब से न किये जाये और इनमें पूरी तरह पारदर्शिता बरती जाये। उन्होंने बताया कि निदेशालय में भ्रष्टाचार के मामले नगण्य हैं साथ ही, उन्होने निदेशालय के अधिकारियों कर्मचारियों से आग्रह किया कि अपने काम इसी ईमानदारी से प्रतिपादित करें जिससे निदेशालय की प्रतिष्ठा बढेगी और हम सब मिल कर देश को भ्रष्टाचार मुक्त कर पायेंगें। निदेशालय के पूर्व सतर्कता अधिकारी एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर.पी. दुबे ने सतर्कता पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होने भ्रष्टाचार के विभिन्न आयामों पर विस्तृत चर्चा करते हुये देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने की अपील अधिकारियों एवं कर्मचारियों से की।

निदेशालय के सतर्कता अधिकारी डॉ. वी.के. चौधरी द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की घोषणा की गई एवं मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण–पत्र एवं पुरस्कार वितरित किये गये।

हिन्द प्रेम, राष्ट्रीय एकता और आजादी की भाषा है।

सेठ जमनालाल बजाज

पेस्टीसाइड प्रयोग पर सावधानियां तथा सुरक्षा उपकरणों के उपयोग पर परिचर्चा का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में पेस्टीसाइड प्रबंधन में प्रयोग होने वाली सुरक्षा उपकरणों एवं सावधानियां के उचित उपयोग पर दिनांक 30.10.2021 को एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने सभी वैज्ञानिको, तकनीकी अधिकारी, कर्मचारियों एवं प्रक्षेत्र में कार्यरत सभी सहयोगियों से अपील की, कि हमें पेस्टीसाइड का उपयोग करते समय सभी सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए तथा पेस्टीसाइड के बॉक्स पर संलग्न पत्र में दिए गए निर्देशो का पालन करना चाहिए। निदेशालय के द्वारा चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों जैसे मेरा गांव मेरा गौरव, फार्मर फस्ट, अनुसूचित जाति उपयोजना एवं अन्य में चल रहे प्रक्षेत्र प्रदर्शनों पर छिड़काव के समय इसका उपयोग अति आवश्यक है जिससे अन्य किसान भाई भी इन उपकरणों को देखकर उपयोग कर सकें । डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा खरपतवारनाशियों के घोल तैयार करने से लेकर उसके प्रयोग तथा डिब्बो के उचित निस्तारण के बारे में बताया गया।

इस कार्यक्रम में बी.ए.एम.एफ. के अधिकारी डॉ. आशीष नेमा ने बहुराष्ट्रीय कम्पनी के सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत लोगो को पेस्टीसाइड उपयोग, खरीद से लेकर उसके भण्डारण, घोल की तैयारी, मात्रा, प्रयोग, प्रयोग पश्चात साफ–सफाई तथा पेस्टीसाइड के डिब्बों का किस तरह से निपटारा किया जाये आदि के संबंध में विस्तार से जानकारी दी तथा सभी को इसके प्रयोग के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला में निदेशालय के 80 से ज्यादा अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

भारत में एक भाषा हिन्दी ही राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकती है।

डॉ. ग्रियर्सन

हिन्दी में राष्ट्रीयता बनने की पूरी क्षमता है।

राजा राममोहन राय

साम्प्रदायिक सदभाव
अभियान सप्ताह
एवं झंडा दिवस
दिनॉक 19 से 25 नवम्बर, 2021
आयोजक
भाकृअनुप- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)

साम्प्रदायिक सदभाव
अभियान सप्ताह
एवं झंडा दिवस

राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भावना सप्ताह एवं झंडा दिवस का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में 19 नवम्बर, 2021 से पूरे देश मे मनाये जा रहे राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भावना सप्ताह का समापन झंडा दिवस के रूप में दिनांक 25 नवम्बर, 2021 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर निदेशालय के समस्त वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी एवं छात्र उपस्थित रहे। सर्वप्रथम संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. पी.के. सिंह ने सांप्रदायिक सद्भावना एवं झंडा दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि धार्मिक सद्भाव हमारे देश की समृद्ध परंपरा रही है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने विश्व में जो ख्याति और सम्मान पाया है, वह विश्व के सिर्फ चुनिंदा देशों को ही प्राप्त हुआ है। अपने प्राचीन संस्कृति और सभ्यता की समृद्ध विरासत को संरक्षित रखना देश के हर नागरिक का कर्तव्य है, ताकि सांप्रदायिक सौहार्द बना रहे और देश की एकता एवं अखंडता अक्षुण रहे।

डॉ. सिंह ने बताया कि कौमी एकता कार्यक्रम हमारे देश के विभिन्न जातियों, धर्मों, प्रान्तों और संप्रदायों को एक साथ लाने का कार्य करता है क्योंकि अनेकता में एकता ही हमारे देश का मूल मंत्र है। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने कौमी एकता एवं झंडा दिवस पर अपने विचार रखे।

इस अवसर झंडा टिकटों का वितरण कर धनराशि को एकत्रित किया गया जिसका उपयोग सरकार द्वारा प्रभावी पुनर्वास की योजनाओं के तहत सांप्रदायिक, जातीय या आतंकवादी हिंसा में होने वाले अनाथ एवं प्रभावित बच्चों को सहायता प्रदान करने में किया जाता है। इस दौरान सभी ने शपथ ग्रहण कर सांप्रदायिक सद्भावना को भविष्य में बनाये रखने का संकल्प लिया।

हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता।

पंडित गोविंद बल्लभ पंत

परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो अपने में
अपनी भाषा में उन्नति करो।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र

विश्व मृदा दिवस
World Soil Day
दिनांक: 05 दिसम्बर, 2021
Halt soil salinization,
boost soil productivity

विश्व मृदा दिवस
World Soil Day
Halt soil salinization,
boost soil productivity
आयोजक

विश्व मृदा दिवस का आयोजन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में दिनांक 5 दिसम्बर, 2021 को विश्व मृदा दिवस मनाया गया। विश्व मृदा दिवस किसानों को मृदा स्वास्थ्य में सुधार लानें हेतु जागरूक करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस वर्ष का विषय "मृदा लवणीकरण रोकना एवं उत्पादन बढ़ाना" है। कार्यक्रम में विश्व में मृदा लवणीकरण की समस्या को रोकने एवं उससे पैदावार को बढाने के पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 155 महिला/पुरूष कृषकों के अलावा संस्थान के कृषि वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने भी भाग लिया ।

डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने अपने उद्बोधन में कहा कि मृदा एक जीवित संरचना है, इसलिए इसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना हमारा परम कर्तव्य है। स्वस्थ मृदा से ही स्वस्थ मानव, स्वस्थ पर्यावरण एवं स्वस्थ समाज का निमार्ण संभव है। बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण–पोषण हेतु जहां एक ओर भूमि की उर्वराशक्ति को बढ़ाने की आवश्यकता है, वही दूसरी ओर मृदा लवणता एवं क्षारीयता को कम करके उसे उपजाऊ बनाना है, जिससे कम जमीन से भी अधिक उत्पादन एवं लाभ प्राप्त किया जा सके। उन्होने मृदा स्वस्थ्य सुधार हेतु संतुलित पोषण व संरक्षित खेती अपनाने पर जोर दिया, साथ ही खेतो में होने वाले खरपतवारों एवं अन्य फसल अवशेषो से खाद बनाने की विधि के बारे में बताया जिसकें उपयोग से मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये कृषकों से अपील भी की।

डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने सबका स्वागत करते हुये मृदा स्वास्थ्य को सुधारने की आवश्यकताओं एवं विधियों पर बल दिया साथ ही मृदा में रसायनो के उपयोग से होने वाले प्रदुषण को रोकने संबंधी जानकारी प्रदान की साथ ही कृषक बंधुओं से अपील करते हुए कहा कि पूर्व फसल के अवशेष (नरवाई/पराली) को न जलायें इससे मृदा में उपस्थित उपयोगी जीवाणु नष्ट हो जाते है व पर्यावरण भी दूषित होता है, संरक्षित खेती इस समस्या का उचित विकल्प है।

इस अवसर पर डॉ. के.के. बर्मन, डॉ. विजय कुमार चौधरी, डॉ. योगिता घरडे एवं डॉ. दिवाकर रॉय ने मृदा स्वास्थ्य को सुधारने की आवश्यकताओं एवं विधियों पर कृषको से चर्चा की। कार्यक्रम के अंत में किसानों को केंचुआ खाद बनाने की विधि का प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र व टेक्नोलॉजी पार्क का भ्रमण कराकर नवीन तकनीको की जानकारी प्रदान की गई।

हिंदी भारत की राष्ट्र्भाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।

राजगोपालाचारी

जीरो बजट प्राकृतिक खेती पर
माननीय प्रधानमंत्री जी का संबोधन
एवं
कृषक-वैज्ञानिक अंतरफलक बैठक
आयोजक

प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

जबलपुर के आसपास के गांवों के किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक करने के लिए निदेशालय ने 16 दिसंबर, 2021 को कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में बरगी, पाटन, पनागर और आसपास के गांवों के किसानों की उपस्थिति रही। उन्हें भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा किसान समुदाय को संबोधन का लाइव वेबकास्ट दिखाया गया।

वर्तमान में जहां एक ओर हम खाद्यान्न उत्पादन में न केवल आत्मनिर्भर हो चुके है बल्कि दूसरे देशो को निर्यात करने में भी सक्षम है, वही दूसरी ओर उत्पादन लागत में वृद्धि एवं कृषि में रसायनों (रसायनिक खादों एवं कीटनाशकों) का बढ़ता उपयोग जिसके कारण पर्यावरण, मृदा स्वास्थ्य एवं खाद्यान्न उत्पादों पर कुप्रभाव एक चिंता का विषय है। इसे ध्यान में रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी ने ''प्राकृतिक खेती'' विषय पर देश के कृषकों एवं वैज्ञानिकों से वर्चुअल माध्यम के द्वारा चर्चा की। माननीय प्रधानमंत्री जी के उद्बोधन को किसानों तक पहुंचाने के लिए खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 200 कृषकों ने भाग लिया तथा प्रधानमंत्री जी के उद्बोधन को सुना।

इस अवसर पर गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत ने हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और देश के अन्य स्थानों में प्राकृतिक खेती के अपने व्यवहारिक और व्यक्तिगत अनुभव साझा किए, माननीय श्री आचार्य जी द्वारा प्राकृतिक खेती की अवधारणा और वास्तविक जीवन की सफलता की कहानी को किसानों ने सुना। उन्होंने इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री के उत्साहजनक शब्दों पर भी संतोष व्यक्त किया है।

डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–ख.अनु.नि. ने किसानों से इस नई अवधारणा को कम से कम अपने खेत के कुछ छोटे हिस्सों में अपनाने का आग्रह किया। इस अवसर पर समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एवं अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे। लाइव वेबकास्ट देखने के बाद, किसानों को बेहतर खरपतवार प्रबंधन तकनीकों को दिखाने के लिए निदेशालय के प्रौद्योगिकी पार्क में ले जाया गया।

> सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है।
>
> जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

ICAR-DWR
ISO 9001:2015 CERTIFIED

स्वच्छता पखवाड़ा-2021 का आयोजन

निदेशालय में 16 दिसंबर, 2021 को स्वच्छता पखवाड़ा–2021 कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र द्वारा स्वच्छता शपथ दिला कर की गई। भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा स्वछता पखवाड़ा दिनांक 16.12.2021 से 31.12.2021 तक आयोजित किया गया।

निदेशक डॉ. मिश्र ने कहा कि स्वछता की आदत ही स्वस्थ्य समाज का निर्माण कर सकती है। स्वछता में बाधक प्लास्टिक वेस्ट एवं पर्यावरण को बाधा पहुंचाने वाले उत्पाद से भी समाज को मुक्त करने के लिए सामुहिक प्रयास आवश्यक है। इस निदेशालय में प्रायः आयोजित होने वाले बैठकों, संगोष्ठीयों एवं वर्कशॉप इत्यादि में पर्यावरण के अनुकुल उत्पादों का प्रयोग किया जा रहा है जो सराहनीय है।

निदेशालय द्वारा स्वछता पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न श्रमदान कार्यक्रम, जागरूकता रैली एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन पूरे पखवाड़े के दौरान किया गया एवं प्रतियोगिताओं में सफल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया गया।

यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना भाषा का प्रश्न नहीं अपितु देशाभिमान का प्रश्न है।

एन. निजलिंगप्पा

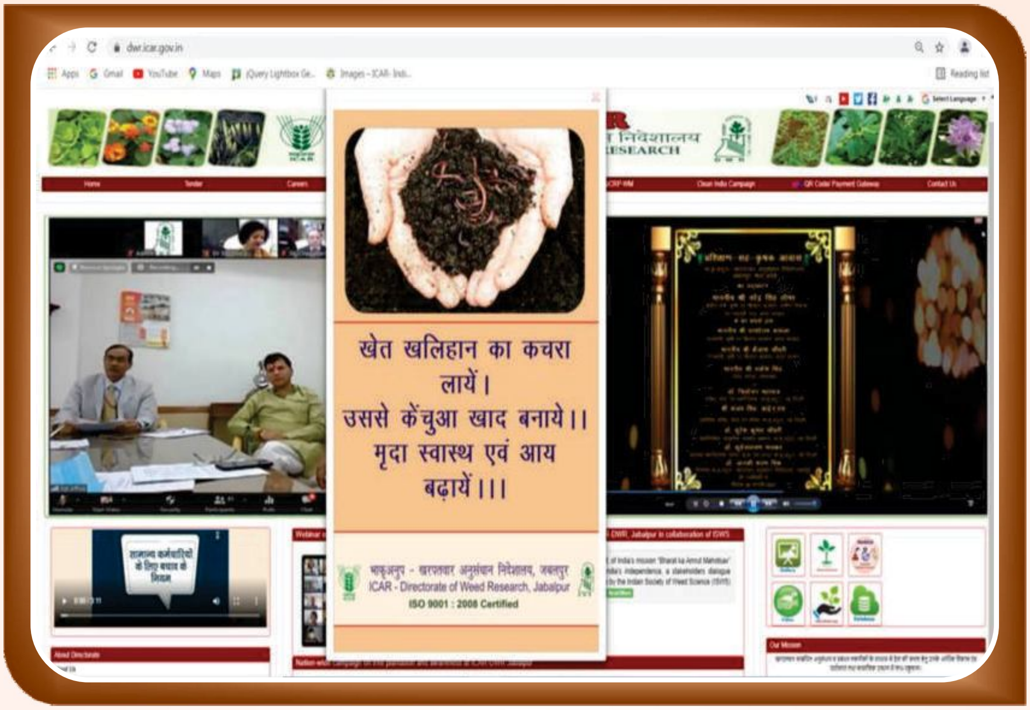
खेत खलिहान का कचरा लायें।
उससे केंचुआ खाद बनाये।।
मृदा स्वास्थ एवं आय बढ़ायें।।।
भाकृअनुप - खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर
ICAR - Directorate of Weed Research, Jabalpur
ISO 9001 : 2008 Certified

YouTube
Search
जलकुंभी से केंचुआ खाद
कैसे बनाए ?
Vermicompost from water hyacinth (Hindi)
61 views • Jul 10, 2020
SHARE
SAVE
ICAR-DWR Jabalpur

कृषि-अपशिष्ट के उपयोग की जानकारी के लिए सोशल और डिजिटल मीडिया पर अभियान का आयोजन

भा.कृ.अनु.प के निर्देशानुसार भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर ने जुलाई 2021 के पूरे महीने में जागरूकता बढ़ाने और किसानों को खाद तैयार करने के लिए कृषि–अपशिष्ट का उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करते हेतु सोशल और डिजिटल मीडिया अभियान चलाया गया। इसी उद्देश्य पर आधारित खाद और वर्मी–कम्पोस्टिंग पर 2519 किसानों को एस.एम.एस. संदेश और 1289 किसानों को वाट्सएप के माध्यम से खरपतवार बायोमास एवं उसके उपयोग की जानकारी प्रदान की गई। इन्हें निदेशालय की वेबसाइटों, फेसबुक अकाउंट और ट्विटर हैंडल के माध्यम से भी अपलोड किया गया था। जलकुंभी से वर्मी–कम्पोस्ट तैयार करने पर एक वीडियो और गाजरघास से खाद तैयार करने पर पीडीएफ प्रारूप में एक एक्सटेंशन, फोल्डर निदेशालय द्वारा प्रकाशित किया गया एवं निदेशालय के फेसबुक अकाउंट और ट्विटर हैंडल पर भी अपलोड किया गया। जिसकी लिंक व्हाट्सएप संदेशों के माध्यम से किसानों तक पहुंचाई गई।

जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा (हिन्दी) में नहीं चलता तब तक हम यह नहीं कह सकते कि इस देश में स्वराज्य है।

मोरारजी देसाई

प्रान्तीय ईर्ष्या, द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।

सुभाषचंद्र बोस

Participants (76)
Find a participant
JS Mishra, ICAR DWR
SK Chaudhari, DDG(NRM) ICAR
NT Yaduraju
Samunder Singh
Agronomy AGCBPT
Bhaskar, ADG, ICAR, New Delhi
Bikas Mandal
C.Sivakumar TNAU
C.T. Abraham
Chethan C R
Chinnusamy C
DD CI I/C
Deep Singh Sasode
Deepak Pawar
Deputy Director PP , Tamil Nadu
Dibakar Roy
Invite
Mute All
Recording...
SK Chaudhari, DDG(NRM) ICAR
Stop Video
Security
Participants
Polls
Chat
Share Screen
Pause/Stop Recording
Reactions
More
End

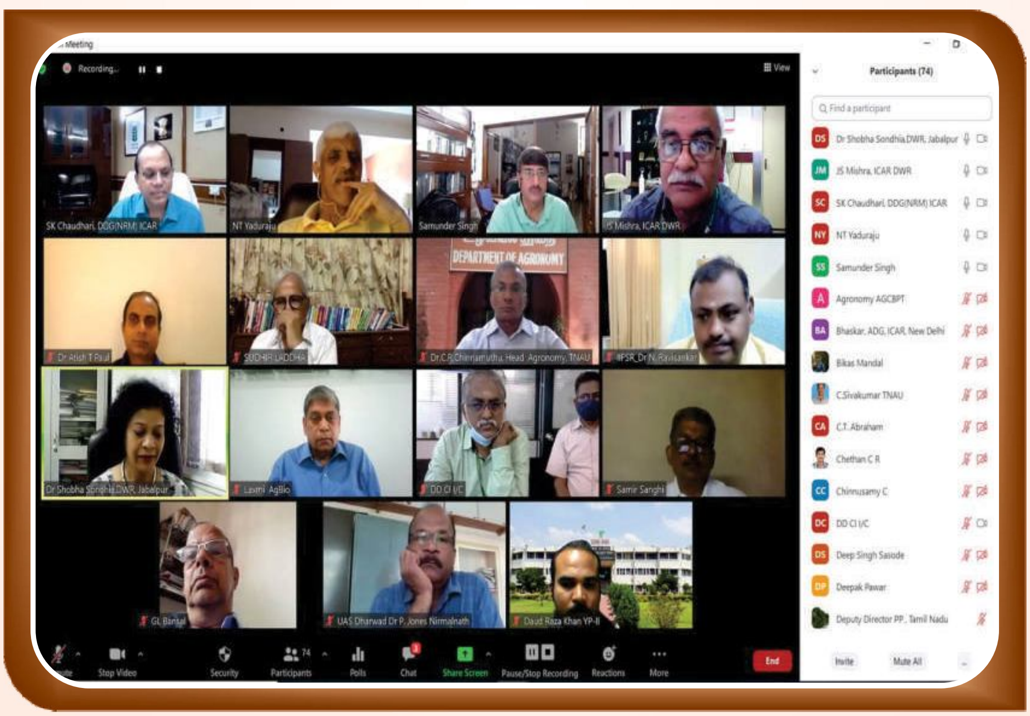
Participants (74)
Find a participant
Dr Shobha Sondhia DWR, Jabalpur
JS Mishra, ICAR DWR
SK Chaudhari, DDG(NRM) ICAR
NT Yaduraju
Samunder Singh
Agronomy AGCBPT
Bhaskar, ADG, ICAR, New Delhi
Bikas Mandal
C.Sivakumar TNAU
C.T. Abraham
Chethan C R
Chinnusamy C
DD CI I/C
Deep Singh Sasode
Deepak Pawar
Deputy Director PP , Tamil Nadu
Invite
Mute All
Recording...
DEPARTMENT OF AGRONOMY
Stop Video
Security
Participants
Polls
Chat
Share Screen
Pause/Stop Recording
Reactions
More
End

''जैव शाकनाशी : वर्तमान स्थिति और भविष्य का रास्ता'' विषय पर विचार-मंथन का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर ने 7 अक्टूबर, 2021 को ''जैव शाकनाशी : वर्तमान स्थिति और भविष्य का रास्ता'' विषय पर एक विचार–मंथन सत्र का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि, डॉ. एस.के. चौधरी, उप महानिदेशक (एनआरएम), भा.कृ.अनु.प. उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में, खरपतवार प्रबंधन के लिए जैव शाकनाशी या प्राकृतिक उत्पादों के महत्व पर जोर दिया। डॉ. चौधरी ने कहा कि सामान्य रूप से फसलों की उत्पादकता और विशेष रूप से जैविक कृषि को बनाए रखने में खरपतवार प्रमुख जैविक तनावों में से एक हैं। उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग का सामना करने के लिए, किसान हानिकारक रासायनिक–निर्भर पारंपरिक कृषि से अधिक टिकाऊ और हरित कृषि पद्धतियों में स्थानांतरित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि बड़े पैमाने पर जैविक खेती को अपनाने के लिए प्रभावी खरपतवार प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. एस. भास्कर, सहायक महानिदेशक (सस्य, कृ.व. एवं जं.प.), भा.कृ.अनु.परिषद ने जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैविक कृषि के तहत क्षेत्र बढ़ रहा है, और सरकार ने परम्परागत कृषि विकास योजना (पी.के.वी.वाई.), भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बी.पी.के.पी.) जैसे कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए इस पर नेटवर्क परियोजना भी चलाई जा रही है।

इससे पहले अपनी परिचयात्मक टिप्पणी में डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक ने खरपतवार प्रबंधन के लिए वैश्विक स्तर पर विकसित और व्यावसायीकरण के लिए जैव शाकनाशी और प्राकृतिक उत्पादों की वर्तमान स्थिति प्रस्तुत की। चर्चा में प्रख्यात खरपतवार वैज्ञानिकों, निदेशक कृषि, तमिलनाडु सरकार और जैव कीटनाशक उद्योगों के प्रतिनिधियों सहित 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

> मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगावें. हम यही समझे कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है।
>
> विनोबा भावे

महिला किसान दिवस
Equity and Empowerment
15 अक्टूबर, 2021

महिला किसान दिवस
Equity and Empowerment
15 अक्टूबर, 2021

महिला किसान दिवस का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर ने 15 अक्टूबर, 2021 को महिला किसान दिवस निदेशालय के सभी स्टाफ सदस्यों के साथ लगभग 50 कृषक महिलाओं की उपस्थिति मे 'समानता और अधिकारिता' विषय पर मनाया गया। भारतीय कृषि में महिला किसानों के योगदान को मान्यता देने और सशक्त बनाने के लिए सरकार की पहल के बारे में जानकारी प्रदान करने हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक ने अपने संबोधन में महिला किसानों का स्वागत किया और भारतीय कृषि में उनके योगदान के बारे में बताया। उन्होंने महिलाओं की समानता और सशक्तिकरण, और उनकी दैनिक घरेलू गतिविधियों के अलावा कृषि और संबद्ध गतिविधियों में महिला किसान की भूमिका और महत्व का उल्लेख किया। कार्यक्रम के दौरान प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी.के. सिंह ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए भारत को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में महिला किसानों के योगदान के बारे में बताया। उन्होंने किसान परिवारों की वित्तीय और सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए विभिन्न स्वयं सहायता समूहों और छोटे उद्यमों के माध्यम से महिला किसानों के सशक्तिकरण पर जोर दिया।

डॉ. योगिता घरडे, ने महिला किसानों से सामान्य रूप से कृषि संबंधित समस्याओं और विशेष रूप से खरपतवार प्रबंधन पर चर्चा की। इस अवसर पर महिला किसानों को विभिन्न कृषि गतिविधियों में, उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया।

हमे अपनी राष्ट्र भाषा पर गर्व करना चाहीये जैसे
और देश के नागरिक करते है

....

जब तक आप के पास कोई राष्ट्र भाषा नहीं है,
आप का कोई राष्ट्र भी नहीं है।

विश्व खाद्य दिवस
75 आज़ादी का अमृत महोत्सव
16 अक्तूबर, 2021
WORLD FOOD DAY
आयोजक
भाकृअनुप- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)
डॉ. आर.पी. दुबे
डॉ. पी.के सिंह

विश्व खाद्य दिवस

''विश्व खाद्य दिवस'' का आयोजन

''आजादी का अमृत महोत्सव'' के तहत कार्यक्रमों की श्रृंखला में, भा.कृ.अनु.प.– खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने 16 अक्टूबर, 2021 को ''विश्व खाद्य दिवस'' के अवसर पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभिन्न इलाकों के किसानों, छात्रों सहित कुल 120 प्रतिभागियों, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और अन्य हितधारकों ने कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. आर.पी. दुबे, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने अपने व्याख्यान में ''विश्व खाद्य दिवस'' के इतिहास पर प्रकाश डाला और दर्शकों को ''एक स्वस्थ कल के लिए सुरक्षित भोजन अब'' विषय के बारे में जागरूक किया। उन्होंने भूख मुक्त विश्व के विकास संबंधी विचार में योगदान करने के लिए सुरक्षित और पौष्टिक भोजन के महत्व पर भी जोर दिया। अपनी प्रस्तुति में डॉ. दुबे ने कुपोषण की समस्या से निपटने के लिए भा. कृ.अनु.प. द्वारा विकसित पोषक–अनाज और जैव–फोर्टिफाइड फसल किस्मों के महत्व पर प्रकाश डाला।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने अपने संबोधन में स्वतंत्रता के बाद भारत में कृषि उत्पादन में हुई वृद्धि पर प्रकाश डाला। जिससे न केवल गरीबी को कम करने में मदद प्राप्त हुई है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण भोजन की भी प्राप्ति हुई है। जिससे कोविड–19 महामारी के दौरान बड़ी आबादी को खाद्यान्न की आपूर्ति करने का एक उदाहरण स्थापित किया गया है। यह कृषि उत्पादन में भारत की आत्मनिर्भरता को इंगित करता है, और जिसके लिए कृषि जानकारों के योगदान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ''विश्व खाद्य दिवस'' के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होने बताया कि ''हमारा यह कार्य हमारे भविष्य को बेहतर उत्पादन, बेहतर पोषण, बेहतर वातावरण और बेहतर जीवन प्रदान करना है।

डॉ. पी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने अपने संबोधन में कहा कि हर साल संयुक्त राष्ट्र के एफ.ए.ओ की स्थापना की वर्षगांठ पर ''विश्व खाद्य दिवस'' के रूप में मनाता है, और इस दिन का उद्देश्य वैश्विक भूख से निपटना और दुनिया भर से भूख मिटाने का प्रयास करना है।

अपनी मातृभाषा को मित्रभाषा बनाए,
मात्र भाषा बनाकर मृतभाषा ना बनाए।
जब भारत करेगा हिंदी को सम्मान,
तभी तो आगे बढ़ेगा हमारा हिन्दुस्तान ।

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान
किसान दिवस
23 दिसम्बर, 2021

स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत किसान दिवस का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने 23 दिसंबर, 2021 को 'प्रगतिशील कृषको द्वारा युवा मन को प्रेरणा' विषय के साथ किसान दिवस का आयोजन किया। यह दिन भारत के पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है। जिन्होंने भारतीय किसानों की भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित किया था। यह देखा गया है कि अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों की तुलना में आय के स्तर में कमी के कारण कृषक समुदाय की युवा पीढ़ी खेती को अच्छे विकल्प के रूप में लेने मे कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रही है। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को आधुनिक और नवीन तकनीकों के प्रति प्रेरित करना था ताकि उनकी कृषि आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो और वे पूर्ण समर्पण के साथ कृषि गतिविधियों में शामिल हों। उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान प्रगतिशील किसान श्री श्याम पटेल, गांव मगरमुहा, शहपुरा, जबलपुर जिले को शहपुरा इलाके के किसानों को उन्नत कृषि पद्धतियों, कृषि पर विभिन्न सरकारी योजनाओं और स्वच्छ कृषि के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने में उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया। श्री पटेल ने अपनी सफलता की कहानी उपस्थित कृषक बंधुओं एवं अन्य गणमान्य मेहमानो के साथ साझा की। उन्होंने गर्व से कहा कि वह अपने खेत में 400% फसल क्षमता से मक्का–हरा मटर का उत्पादन कर रहे हैं और आधुनिक तकनीकों की मदद से पूर्व की तुलना में अपनी कृषि आय को दोगुना कर लिया है।

इस अवसर पर डॉ. पी.के. सिंह, डॉ के.के. बर्मन, डॉ आर.पी. दुबे और डॉ वी.के. चौधरी ने इस वर्ष के किसान दिवस की मूल धारणा के महत्व के बारे में बात की और उपस्थित कृषक बंधुओ से अपने आस–पास के सफल किसानों से उनके अनुभवों का लाभ लेने का आग्रह किया ताकि वे आज की युवा पीढ़ी को छोटे–मोटे काम करने के लिए शहरों की ओर पलायन करने के बजाय एक सम्मानजनक व्यवसायिक विकल्प के रूप में खेती करने के लिए प्रेरित कर सकें।

इस कार्यक्रम के दौरान, किसानों को निदेशालय प्रक्षेत्र पर खरपतवार प्रबंधन तकनीको के प्रदर्शन एवं टेक्नोलॉजी पार्क का भम्रण कराया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों और अन्य कर्मचारियों के साथ आसपास के इलाकों के लगभग 150 किसानों ने भाग लिया।

हिंदी के बिना ना तो आजादी पाई जा सकती है,
और ना तो हिंदी के बिना आजादी बरकरार रह सकती है।

कृषक सभागार
का
उद्घाटन
माननीय डॉ. पंजाब सिंह

स्वच्छता पखवाड़ा
75
आज़ादी का अमृत महोत्सव
दिनांक 16 - 31 दिसम्बर, 2021
आयोजक
भाकृअनुप-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)

कृषक सभागर का उद्घाटन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय में नव निर्मित कृषक सभागार का उद्घाटन दिनांक 29.12.2021 को डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व महानिदेशक, भा.कृ.अनु.परिषद एवं रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी के करकमलो द्वारा निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र एवं डॉ. पी.के. सिंह, प्रभारी, तकनीकी हस्तान्तरण की उपस्थिती में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. पंजाब सिंह ने कहा कि कृषको को नये अनुसंधानो की जानकारी प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय लगातार इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है, साथ ही कृषकों को संस्थान में दिये जाने वाले प्रशिक्षण एवं भ्रमण हेतु उच्च स्तर की सुविधायें प्रदान कर रहा है। डॉ. सिंह ने वैज्ञानिकों से आवहन् किया कि कृषि में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिये ज्यादा लाभदायक कृषक आधारित सरल तकनीकों की खोज करें, जिसे अपनाकर कृषक विभिन्न परिस्थितियों में उचित खरपतवार प्रबंधन करते हुये अपना उत्पादन बढा कर आय में वृद्धि एवं अपने सामाजिक, आर्थिक स्तर को ऊंचा कर सकें।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने मुख्य अतिथि के निदेशालय में आगमन पर हर्ष व्यक्त करते हुये कहा कि निदेशालय द्वारा कृषको को प्रदान की जाने वाली विभिन्न सुविधाओं में आज कृषक सभागार एक नयी कड़ी के रूप में जुड रहा है। डॉ. मिश्र ने मुख्य अतिथि को निदेशालय प्रक्षेत्र का भम्रण कराते हुए वर्तमान में चल रहे विभिन्न शोध कार्यों एवं मुख्य उपलब्धियों के बारे में जानकारी प्रदान की साथ ही प्रचार–प्रसार संबंधी किए जा रहे प्रयासो से अतिथि को अवगत कराया।

हिन्दी की एक निश्चित धारा है, निश्चित संस्कार है।

जैनेन्द्रकुमार

हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है।

राहुल सांकृत्यायन

स्वच्छता पखवाड़ा
आज़ादी का अमृत महोत्सव
दिनॉक 16 - 31 दिसम्बर, 2021
आयोजक
भाकृअनुप–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)
श्री संजय यादव
डॉ. जे.एस. मिश्र

स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छता पखवाड़ा
आयोजक

स्वच्छता पखवाड़ा का समापन

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा मान्नीय प्रधान मंत्री जी के आवाहन पर भारत सरकार के समस्त मंत्रालयों एवं उनके सस्थानों द्वारा दिनांक 16 से 31 दिसम्बर, 2021 तक पूरे देश में स्वच्छता पखवाडे का आयोजन किया गया। इसी क्रम में निदेशालय द्वारा लगातार स्वच्छता कार्यक्रम अयोजित किये गये। जिसके अनर्तगत अलग–अलग स्थानो पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित कर जन मानस को स्वच्छता के प्रति जागरुक किया गया। स्वच्छता पखवाडे के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कृषकों के अलावा कृषि वैज्ञानिक व तकनीकी अधिकारी उपस्थिति रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सम्मानीय श्री संजय यादव,पूर्व मुख्य न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियागिता के सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये।

निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तत्पश्चात् मुख्य अतिथि का परिचय दिया एवं निदेशालय में चल रही गतिविधियों एवं अनुसंधान कार्यों से अतिथि को अवगत कराया। अपने उद्‌बोधन में कहा कि निदेशालय द्वारा किये जा रहे शोध तथा प्रचार–प्रसार एवं निदेशालय के द्वारा निरंतर चलाये जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रमों, जिसमें निदेशालय परिसर के साथ–साथ आसपास के स्कूल, कॉलोनी, गांवों में चल रहे स्वच्छता कार्यक्रम के बारे में बताया साथ ही कहा कि खाद्यान्न उत्पादन बढाने हेतु कृषकों को तकनीकी जानकारी के साथ संरक्षित खेती को अपनाना चाहिए तथा खेतो मे होने वाले खरपतवारों व फसल अवशेषो से खाद बनााने की विधि का उपयोग करके मृदा की उर्वरा शक्ति बढाई जा सकती है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सम्मानीय श्री संजय यादव, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि स्वछता की आदत ही स्वथ्य समाज का निर्माण कर सकती है। स्वछता में बाधा पहुंचाने वाले उत्पादों से होने वाली हानियों से समाज को मुक्त करने के लिए सामुहिक प्रयास आवश्यक है। उन्होंने जबलपुर शहर के आसपास के जलाशयों एवं अन्य जल स्त्रोतों को किस तरह से स्वच्छ बनाये रखा जाये इस बारे में जानकारी दी तथा सभी से सहयोग की अपेक्षा कीं साथ ही स्वछता के फायदों से अवगत कराते हुए विशेष रूप से प्लास्टिक से होने वाले नुकसान से बचाव एवं सिंगल युज प्लास्टिक का इस्तेमाल न करते हुए कपडे के थैले का प्रयोग करने हेतु अनुरोध किया ।

डॉ. के.के बर्मन, प्रधान वैज्ञानिक ने कहा कि स्वच्छता पखवाडे के दौरान आयोजित किये गए कार्यक्रमों के जरिये जन मानस को स्वच्छता के प्रति जागरुक किया गया, इसी क्रम में पूर्व में स्वच्छता पर व्याख्यान श्री श्याम पाठक, कार्यपालक अभियंता, सी.पी.डब्लू.डी., जबलपुर द्वारा प्रदान किया गया था।

अनुसूचित जाति उप योजना
के अंतर्गत
कृषि उद्यमों के माध्यम से कृषकों की आजीविका में सुधार
विषय पर
6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
(27/12/2021 से 01/01/2022)
आयोजक

अनुसूचित जाति उप योजना
के अंतर्गत
आजीविका में सुधार
विषय पर
6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
(27/12/2021 से 01/01/2022)
आयोजक

अनुसूचित जाति के किसानों हेतु 6 दिवसीय प्रशिक्षण

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय द्वारा अनुसूचित जाति उप योजना के अंतर्गत किसानों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने एवं उनकी आय दुगुनी करने के उद्देश्य से कृषि से सम्बंधित विभिन्न उद्यमों पर जानकारी एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण देने हेतु "कृषि उद्यमों के माध्यम से कृषकों की आजीविका में सुधार" विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 27.12.2021 से 01.01.2022 तक आयोजित किया गया ।

उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. अतुल श्रीवास्तव, अधिष्ठाता, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर ने किसानो के हित में एवं उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने हेतु इस प्रशिक्षण के फायदे बताये साथ ही किसानो को इसका लाभ उठाने के लिए कहा । निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र ने चयनित किसानो को बधाई दी एवं प्रशिक्षण में बताये जाने वाले कृषि उद्यमो से किसानो को अतिरिक्त आय अर्जित करने हेतु प्रेरित किया एवं इस अवसर का समुचित लाभ उठाने का आग्रह किया । डॉ. पी.के. सिंह, पाठ्यक्रम निदेशक ने प्रशिक्षण में 6 दिनों के दौरान सिखाये जाने वाले कृषि उद्यमो से सबको अवगत कराया । डॉ. योगिता घरडे, पाठ्यक्रम समन्वयक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की साथ ही किसानो को कृषि के अलावा अतिरिक्त आय के लिए इन उद्यमो को अपनाने पर जोर दिया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान किसानो को मशरूम की खेती एवं उसके उत्पादों, कुक्कुट पालन हेतु विभिन्न खाद्य सामग्री बनाने की विधियों, कदन्न प्रसंस्करण एवं उसके विभिन्न उत्पादों, सिंघाड़े का उत्पादन एवं प्रसंस्करण तथा फूलों की खेती आदि पर सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया । इस आवासीय प्रशिक्षण में जबलपुर के शहपुरा विकासखंड के 28 अनुसूचित जाति के किसानो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

जो सम्मान, संस्कृति और अपनापन हिंदी बोलने से आता है,
वह अंग्रेजी में दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता है।

समाचारों में भाकृअनुप-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय

समाचारों में भाकृअनुप-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय

सी टाइम्स
स्वच्छता के लिए समाज की भागीदारी महत्वपूर्ण :यादव
खरपतवार अनुसंधान निदेशालय में स्वच्छता पखवाड़ा का समापन

प्रदेश टुडे
राजभाषा हिन्दी के सर्वाधिक प्रयोग-प्रसार के लिए निदेशालय को सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार

दैनिक भास्कर
हिन्दी की ओर आकर्षित है पूरा विश्व

नव भारत
स्वच्छता हेतु समाज की भागीदारी अत्यंत आवश्यक

प्रदेश टुडे
पोषण वाटिका महाभियान एवं पौधारोपण का आयोजन
पोषण पर ही समाज का स्वास्थ्य निर्भर : डॉ. मिश्र

सी टाइम्स
जो भाषा सबके साथ सामंजस्य बैठा ले वही सबसे समृद्ध: राय

देशबन्धु
वैज्ञानिक-कृषक परिचर्चा : उत्तम स्वास्थ्य हेतु पोषक अनाज भविष्य की जरूरत : डॉ.भास्कर

हरिभूमि
कृषि अनुसंधान प्रौद्योगिकियों के उपयोग से देश में आया महत्वपूर्ण बदलाव : तोमर

राज एक्सप्रेस
खरपतवार अनुसंधान निदेशालय में 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ
किसानों को मिलेगी कृषि उद्यमों की जानकारी और व्यवहारिक प्रशिक्षण

हरिभूमि
गुणवत्तायुक्त उत्पादन हेतु संतुलित पोषण आवश्यक

प्रदेश टुडे

नव भारत
सेहत के लिये योग जरूरी

हरिभूमि
आधुनिक तकनीकों के माध्यम से जल संरक्षण जरूरी : डॉ. जेएस मिश्र
विश्व जल दिवस पर कार्यशाला आयोजित

राज एक्सप्रेस
किसानों का खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना है उद्देश्य : डॉ.मिश्र

प्रदेश टुडे
आधुनिक तकनीकों के माध्यम से जल संरक्षण जरुरी : डॉ. मिश्र
विश्व जल दिवस पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

किसानों का खाद्यान्न उत्पादन और जीवन स्तर बढ़ाना उद्देश्य : डॉ. मिश्र

नव भारत
हिन्दी के सर्वाधिक प्रयोग-प्रसार हेतु सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार

जबलपुर एक्सप्रेस
खरपतवार अनुसंधान निदेशालय प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

स्वतंत्र मत
कम लागत से उच्च गुणवत्ता का खाद्यान्न बढ़ रहा

राज एक्सप्रेस
कृषि अनुसंधान प्रौद्योगिकियों के उपयोग से देश में आया महत्वपूर्ण बदलाव : तोमर
खरपतवार प्रबंधन पर विशेष जोर

हरिभूमि
नवीन अनुसंधान प्रचार किसानों तक पहुंचे: डॉ.पंजाब सिंह

निदेशालय के वर्ष 2021 के हिन्दी प्रकाशन

भा.कृ.अनु.प. – खरपतवार अनुसंधान निदेशालय

ICAR - Directorate of Weed Research

जबलपुर, मध्य प्रदेश

Jabalpur, Madhya Pradesh

आई.एस.ओ. 9001 : 2015 प्रमाणित

ISO 9001 : 2015 Certified